RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 5 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

जनवरी 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

मगरा क्षेत्र का समग्र विकास ही मेरा मुख्य ध्येय : विधायक सुदर्शनसिंह

Exclusive Interview

ऋण माफी नहीं स्थायी समाधान, आत्मनिर्भर बनाने की है जरूरत

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

An ISO -9001:2015

M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

SHiNE

GST/Tally ERP

RS-CIT
Tally
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
DCA
PGDCA
PDCA
Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

सम्पादकीय

नव वर्ष की प्रासंगिकता

प्रिय पाठकों,

जीवन और प्रकृति एक वर्तुलाकार क्रम में चलते हैं। जैसे जन्म-बाल्यावस्था-युवावस्था-वृद्धावस्था-मृत्यु और पुनर्जन्म प्रकृति में भी ग्रीष्म-वर्षा-शरद और पुन: ग्रीष्म, एक वर्तुल पूरा हुआ और दूसरा शुरू। भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ला एकम से शुरू होकर फाल्गुन मास पर खत्म होते हैं, चैत्र से गर्मी शुरू होती है और फाल्गुन में सर्दी समाप्त होती है। यह भी एक वर्तुल पूरा हुआ। पेड़ पर नव पल्लव, कोपले रूपी नव जीवन का प्रस्फूटन (चैत्र मास में) हुआ और पतझड में (फाल्गुन) सारे पत्ते पीले होकर भूशायी हुए जीवन चक्र पूरा हुआ। इसी क्रम को आद्य शंकराचार्य ने अपनी कृति में इस प्रकार कहा हैं- ''पुनरपि जननम्, पुनरपि मरणं। पुनरपि जननी जठरे शयनं।।''

आधुनिक विज्ञान के विकास का मूल प्रकृति के छीपे रहस्यों का अनावरण हैं। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने प्रकृति का सूक्ष्मतम् अध्ययन व खगोलिय नक्षत्रों का वैज्ञानिक विधि से चिन्तन कर भारतीय पंचांग की रचना की। इसलिए प्रत्येक भारतीय मास का नाम पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र में रहता है, उसी के अनुसार तय किए गए है। जैसे चैत्र मास में चित्रा नक्षत्र, वैशाख मास में विशाखा, ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठा.... आदि। भारतीय पंचांग विश्व में प्राचीनतम एवं पूर्णतया वैज्ञानिक व खगोलिय नक्षत्रों पर आधारित होने के साथ साथ अनेक महापुरूषों को अपने अंक में समेटे हुए हैं।

अब बात करें ग्रेगोरियन केलेंडर के नववर्ष की, जो 1 जनवरी से प्रारम्भ होकर 31 दिसम्बर को समाप्त होता है। भारतीय नववर्ष से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि इसके प्रारम्भ पर न तो प्रकृति में कोई परिवर्तन होता है, ना ही किसी शुभ प्रसंग का इतिहास इस दिन से जुड़ा हुआ। न तो यह वैज्ञानिकता पर आधारित है, ना ही खगोल शास्त्र से इसका कोई लेना देना है। ग्रेगोरीयन केलेण्डर के इतिहास से पता चलता है कि यह पंचांग 46 वर्ष ईसा पूर्व मार्च मास में शुरू होता था तथा वर्ष में कुल 10 माह होते थे, परन्तु रोमन सम्राट जुलियस सीजर व उसके बाद उसके पौत्र आगस्ट्स सीजर ने ग्रेगोरीयन केलेंडर में एक-एक माह अपने नाम से जोड़ दिए। इसी कारण इसके नववर्ष की शुरूआत मार्च के स्थान पर 1 जनवरी से हुई।

अब प्रश्न उठता है कि किस नववर्ष को मनाए ? तो इसमें मेरा मत है प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश-समाज व संस्कृति के अनुकूल आचरण करना चाहिए। अत: हम सभी के लिए मनाना ही श्रेयस्कर है, परन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम अन्य संस्कृतियों में प्रचलित मान्यताओं, विचारो पर मानबिन्दूओं को निम्न या हेय दृष्टि से देखें। अन्य की बुराई करके हम अपने को श्रेष्ठ साबित नहीं कर सकते। यदि हम चाहते हैं कि भारतीय नव वर्ष की ध्वजा दिक्दिगन्त तक फैले तो इसके लिए हमें हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिन्होंने योग की महिमा, उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव आदि का वैज्ञानिक महत्व उचित ढंग से विश्व पटल पर रखा, तो सम्पूर्ण विश्व ने योग को न केवल अपनाया, वरन् संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून की तिथि को योग दिवस घोषित किया गया। मुझे लगता है कि अंग्रेजी नव वर्ष की बिना बुराई किए, भारतीय नव वर्ष के वैज्ञानिक आधार को विश्व के मंच पर ढंग से रखा जाए तो चैत्र शुक्ला एकम को विश्व में नव वर्ष के प्रथम दिन के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

अनेक बंधुओं द्वारा अंग्रेजी नव वर्ष की शुभकामनाओं को सोशल मीडिया पर बेगानी शादी में अब्दुला दीवाना के रूप में टिप्पणीत किया गया, परन्तु शादी किसी की भी हो, हमारे मन को प्रसन्न होने का, आनन्दित होने का अवसर मिलता है, तो उसे छोड़ना भी ठीक नही हैं, भारतीय उत्सवधर्मी होते हैं, वर्ष में सैकड़ों उत्सव मनाने वाला भारतीय समाज एक और नया उत्सव मनाने लगे तो कोई हर्ज नहीं है, परन्तु नव वर्ष के नाम पर अर्द्धरात्री में पटाखों के माध्यम से वायु व ध्वनी प्रदूषण करना, शराब और ड्रग्स का सेवन करना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता।

नव वर्ष अक्सर त्रुटियों से सीख लेकर उनके परिमार्जन का, क्या खोया क्या पाया इस पर विचार करने का, नए संकल्प लेने का, भविष्य के लक्ष्य तय करने का। मेरे विचार में नए वर्ष के आरम्भ में हमें कुछ छोटे-छोटे निम्न लक्ष्य व संकल्प तय करने चाहिए, तभी हमारा नव वर्ष मनाना सार्थक होगा - (1) आधा घंटा नियमित कोई न कोई शारीरिक व्यायाम-योग करेंगें। (2) वर्षभर में पसंदीदा विषय या लेखक की 5 पुस्तकें पढ़ेंगे। (3) सोशल मीडिया के उपयोग को कम कर निर्धारित समय तय करना। (4) परिवार के साथ अधिक समय व्यतीत करना, जैसे एक समय का भोजन परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर करेंगें। (5) कोई नई विद्या (नृत्य, वाद्य, टेक्नोलॉजी, फोटोग्राफी, तैराकी, घुड़सवारी आदि) सीखना।

शेष कुशल- जय जय, *नववर्ष की शुभकामनाएं*

अतिथि सम्पादक

ललित साहू
एडवोकेट, कांकरोली
मोबाइल : 92145-27102

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी	सूर्यप्रकाश दीक्षित, हेमेन्द्रसिंह
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी :** मगरा क्षेत्र का समग्र विकास ही मेरा मुख्य ध्येय :विधायक पेज- 3
2. **व्यंग्य :** कड़ाके की ठंड में संकल्प सहित गोदड़े में घुसने का दिन पेज - 8
3. **चिंतन :** पछतावा पेज - 9
4. **मंथन :** ऋण माफी नहीं स्थायी समाधान, आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत पेज- 10
5. **तीखी मिर्ची :** कर्जमाफी का चलन पेज - 13
6. **माटी का लाल :** सेठ भगवानदास पेज - 15
7. **गुमनाम शख्सियत :** किन्नर पारसमणि पेज - 17
8. **मेरे गांव मेरे लोगा:** 1. ब्रजभूषणलाजी 2. कंठमणि शास्त्री पेज - 19
9. **आध्यात्म :** शब्द तो मात्र ध्वनि है पेज - 21
10. **व्यंग्य:** इतना आसां भी नहीं है पप्पु होना पेज - 22
11. **स्मृति शेष :** रामचन्द्र बागोरा क्षेत्र के प्रखर जननायक पेज - 24
12. **कविताएं :** नन्हीं सी लौ, प्यार का झरना और नया साल पेज -27
13. **संस्मरण :** राजसमंद के गौरव है कमर मेवाड़ी पेज -28
14. **संस्मरण :** एक था सुन्दर टॉकीज पेज - 30
15. **व्यंग्य :** परम दुखी भा पवनसुत पेज - 32
16. **मेवाड़ी चौपाल :** पड़दा री बेमारी सब रोगां पे भारी पेज - 34

मगरा क्षेत्र का समग्र विकास ही मेरा मुख्य ध्येय : विधायक रावत

भीम विधानसभा के नवनिर्वाचित युवा **विधायक सुदर्शनसिंह रावत** के साथ **जयवर्द्धन** का **साक्षात्कार।** भीम क्षेत्र की समस्याओं के त्वरित निस्तारण, समग्र विकास की नई योजनाएं बनाने से लेकर निजी जीवन तक कई रोचक सवालों के दिलचस्प जवाब दिए। इस पर **उप सम्पादक विजय शर्मा, अभिषेक माहेश्वरी** की **खास रिपोर्ट**

सवाल : आपको राजनीति का अनुभव विरासत में मिला है। आप अपने पिता के नक्शे कदम पर चलेंगे या उसमें कुछ नई सोच को भी शामिल करेंगे ? अपना राजनीतिक आदर्श आप किसको मानते हैं ?

जवाब : विरासत से मिली राजनीति का कोई दुरुपयोग नहीं होगा और जनहित में सदुपयोग करुंगा। साथ ही पिताजी ने जो भी किया, उससे भी ज्यादा बेहतर कार्य नए लोगों को साथ लेकर नई सोच और नई तकनीक को शामिल करके करुंगा। मेरे आदर्श मेरे दादाजी मेजर फतहसिंहजी है, जिन्होंने पूर्ण ईमानदारी से सख्ती से कार्य किया, मगर जनता के बीच में सदैव नम्र रहे। मेरा परिवार उनके आदर्शों पर ही चलता रहा है।

सवाल : भीम विधानसभा में कांग्रेस से टिकट को लेकर काफी उठापटक चली। टिकट के दावेदारों में आपके पिता श्री लक्ष्मण सिंह रावत को ही प्रबल दावेदार माना जा रहा था। अंत में टिकट का लकी ड्रॉ आपके नाम का खुलाए क्या आपको इसकी पहले से उम्मीद थी ?

जवाब : नहीं, हम भीम विधानसभा क्षेत्र के सभी कार्यकर्ता और पार्टी भी लक्ष्मणसिंहजी को ही चाहती थीं, मगर पार्टी में जब कोई नियम बनते हैं, तो पार्टी के लिए बनते हैं, जो किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं बनते। पार्टी ने जो आदेश दिया, उसी के तहत मैं आज आपके समक्ष बैठा हूं।

सवाल : विधायक चुनने के बाद आपको एक बड़ी जिम्मेदारी मिली है। इस जिम्मेदारी के बाद आपके दैनिक दिनचर्या में क्या बदलाव हुए हैं ?

जवाब : निश्चित तौर से एक बहुत अहम जिम्मेदारी है। पहले मैं खुद के लिए काम करता था, अब मुझे जनता के लिए काम करना है।

सवाल : 15 साल से भीम विधानसभा में जमीं भाजपा की कुर्सी छीनने में आप कामयाब रहे। क्या आप इस जीत को लेकर पहले से आश्वस्त थे ?

देवगढ़ में स्वागत के दौरान भीम विधायक सुदर्शनसिंह रावत,नगरपालिका अध्यक्ष अंजना जोशी, जयवर्द्धन उप सम्पादक विजय शर्मा व अन्य।

जवाब : 100 प्रतिशत आश्वस्त था। मेरे को कहीं पर, किसी भी तरह से डाउट नहीं था। परन्तु धनबल के उपयोग से कुछ सीटें कम हुई है। इसके लिए पार्टी ने राजस्थान स्तर पर समीक्षा की है, जिसमें यही बात सामने आई।

सवाल : आपने जो भी चुनाव में वादे किए हैं। इसमें आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता क्या है। सबसे पहला कौनसा काम आप हाथ में लेंगे ?

जवाब : देखिए, मूलभुत सुविधाएं जनता को मिलनी चाहिए और उसमें हम चाहते हैं कि स्वास्थ्य सुविधा की जो हालत खराब है, उसे हम सबसे पहले लेना चाहेंगे। उसके बाद जहां जहां भी पानी की कमी है, उसकी व्यवस्था के लिए सरकार से बात करेंगे। स्कूलों में शिक्षकों की कमी की पूर्ति हो, इसके लिए भी प्रयास करुंगा। कांग्रेस कार्यकर्ताओं से विचार विमर्श कर कार्यों की प्राथमिकता तय करेंगे।

सवाल : आपके विधानसभा क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या फ्लोराइड युक्त पानी से होने वाली बीमारियां है, जिसके लिए योजनां तो कई बनती है, मगर भीम क्षेत्र में भूमिगत जल भी काफी नीचे हैं। बिसलपुर बांध से भीम तक पानी लाने की योजनाएं भी बनी, लेकिन अभी तक वह योजना साकार रूप नहीं ले पाई। पेयजल व सिंचाई के स्थायी समाधान को लेकर आप क्या करेंगे ?

जवाब : मैंने जब मेरी पूरी विधानसभा क्षेत्र का दौरा किया था, तभी मैंने पाया कि सबसे बड़ी समस्या पानी की है। 15 साल तक विधायक महोदय उस समस्या को नहीं समझ पाए और मैं समझ चुका हूं। जैसे ही मंत्रीमंडल के कार्य प्रारंभ होंगे, तभी हम प्रयास करेंगे कि चम्बल का पानी हम भीम तक लाए। बिसलपुर का पानी पर्याप्त नहीं है, जो ब्यावर व जयपुर के लिए भी कम पड़ेगा। यह बहुत ही महत्वाकांक्षी योजना है, मगर इसके लिए हम जान लगा देंगे।

सवाल : भीम विधानसभा क्षेत्र में शराब का काफी बोलबाला रहा है और इसको लेकर महिलाओं ने शराबबंदी की आवाज बुलंद की। काछबली और मंडावर में शराबबंदी भी हुई। अब क्या आप अन्य ग्राम पंचायतों में भी शराबबंदी का प्रयास करेंगे ?

जवाब : महिलाएं बहुत दुखी है, परेशान है। मैंने पहले भी कहा था और आज भी कह रहा हूं कि शराबबंदी में महिलाएं आगे बढ़कर प्रयास करेंगी, प्रस्ताव रखेंगी, तो मेरा पूर्ण सहयोग, समर्थन रहेगा। मैं पुराने वाले विधायक महोदय की तरह कम से कम अपने ऑफिस के नीचे शराब का गोदाम तो नहीं चलाऊंगा, कम से कम। निश्चित तौर पर शराब की अवैध ब्रांचें चल रही है, जिन्हें तुरंत बंद करवाएंगे।

सवाल : विधानसभा क्षेत्र में प्रशासनिक भ्रष्टाचार हद से ज्यादा है। इसे रोकने की दिशा में आपके क्या प्रयास रहेंगे ?

जवाब : भ्रष्टाचार के साथ हमारे क्षेत्र में गुंडागर्दी, भूमाफिया और खननमाफिया काफी है और इसी मुद्दे पर हम चुनाव जीते हैं। और इन्हें भीम विधानसभा क्षेत्र से जड़ से उखाड़ कर फेंका जाएगा।

सवाल : देवगढ़ क्षेत्र के लोगों का मानना है कि भीम क्षेत्र के विधायक होने से देवगढ़ का समग्र विकास नहीं हो पाता है। इस मुद्दे पर आपका क्या कहना है ?

जवाब : यह बहुत ही अच्छा पॉइंट उठाया आपने और इसी मुद्दे पर गुमराह करके वोटिंग हुई और जनता भावुक हो गई, मगर जनता का दोष नहीं है। मैं गांव गांव जा रहा था, तब मुझे भी महसूस हो रहा था। मैंने कहा कि किसी के बहकावे में मत आइएगा। परन्तु इसमें हम कोई भेदभाव नहीं रखेंगे। हमको जहां वोट मिला, उसमें भी काम करेंगे और जहां वोट नहीं मिला, वहां भी काम करेंगे। काम अच्छे तरीके से समान मापदंड से होगा।

सवाल : देवगढ़ के मुकाबले भीम कस्बे की आबादी बहुत ज्यादा है। फिर भी भीम ग्राम पंचायत अब तक नगरपालिका नहीं बन पाई। इसको लेकर आप क्या खास प्रयास करेंगे ?

जवाब : मैं तो जनता की मांग पर काम करने वाला आदमी हूं। जनता जैसे कहेगी, वैसा करुंगा। जनहित में जो अच्छा हो सकेगा, वह करने का प्रयास करेंगे। जनता चाहेगी, तो नगरपालिका बनवाने के प्रयास करेंगे।

सवाल : भीम उपखंड मुख्यालय पर साफ सफाई के पुख्ता प्रबंध नहीं है। साथ ही सड़कों और हाईवे पर मवेशी भी मंडराते रहते हैं। क्या इसके स्थाई समाधान को लेकर आप कोई खास प्रयास करेंगे ?

जवाब : इस बात को भी हम गहराई से देखेंगे कि कैसे इसका स्थायी समाधान हो सकता है। भीम के सरपंच साहब भी हमारे साथ है। हम मिलजुल कर जो भी बेहतर हो पाएगा, उसके लिए प्रयास करेंगे।

सवाल : भीम क्षेत्र के अन्दर बालिकाओं और महिला शिक्षा में काफी कमी देखी गई है। इसके बारे में आपकी कोई कार्ययोजना है ?

जवाब : बिल्कुल, बालिकाओं और महिलाओं में नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र शिक्षा की कमी है। पूरे साल में पूर्व विधायक एक भी स्कूल नई नहीं खुलवाई। हम 12 स्कूलों से पीछे रह गए। अब लेप्स हुई स्कूलों को वापस लेने के प्रयास करेंगे। 15 साल में शिक्षा की दृष्टि से काफी पिछड़ गया है, जिसकी अब भरपाई करने का प्रयास करेंगे।

श्री बालकृष्ण उमावि कांकरोली में मतगणना में जीत के रुझान में चाय की चुस्की के साथ खुशी जताते भीम विधायक सुदर्शनसिंह रावत

सवाल : आपके विधानसभा क्षेत्र के देवगढ़ का गौरवशाली इतिहास रहा है कि दिवेर के अन्दर मैराथन ऑफ मेवाड़ का प्रतीक है, फिर भी इस बार कुंभलगढ़ महोत्सव में दिवेर को न तो प्राथमिकता मिली और न ही प्रोत्साहन मिला। आपके क्षेत्र में गोरमघाट है, जहां पर्यटन से रोजगार की बहुत संभावनाएं है। इस दिशा में आपके क्या प्रयास होंगे ?

जवाब : निश्चित तौर पर महाराणा प्रताप हमारे लिए भी श्रद्धा व गौरव का प्रतीक है। दिवेर में कुछ लोगों ने गलतफहमी फैलाई थी कि कांग्रेस का शासन आने पर महाराणा प्रताप के साथ भेदभाव किया जाएगा। मैंने वहां भी कहा था कि किसी भी सूरत में भेदभाव नहीं होगा, हम मेवाड़ के लोग है और महाराणा के वशंज है तथा निश्चित तौर पर उनकी गरिमा बढ़ाने की दिशा में काम करेंगे।

सवाल : राजनीतिक क्षेत्र के अंदर प्रतिपक्ष सबसे बड़ी बाधा खड़ी करता है और माना जा रहा है कि यदि पूर्व में भाजपा में रहे अजय सोनी निर्दलीय खड़े नहीं होते, तो आपकी जीत मुश्किल थी। ऐसे में अब आपका जनाधार बढ़ाने के लिए आप मतदाताओं के लिए क्या करेंगे ?

जवाब : नहीं, इसमें मेरा मानना दूसरा है कि अजय सोनी जी ने खड़े होकर हमारे ज्यादा वोट काटे हैं। जबकि सब लोग समीक्षा कर चुके हैं कि हमारा मार्जिन 15 हजार से ज्यादा होता, यदि वो खड़े नहीं होते। फिर भी इसके विपरीत अजय सोनीजी के पास कोई बेहतर आईडिया या कार्ययोजना होगी, तो हम उन्हें साथ लेकर काम करेंगे और मैं तो कहता हूं कि हरिसिंहजी भी भेदभाव दूर करके काम करना चाहेंगे, तो हम उनका भी स्वागत करेंगे। हमारा उनसे भी कोई मनभेद नहीं है।

सवाल : भीम और देवगढ़ ने भारतीय सेना को बहुत से जवान दिए हैं। सेवानिवृत्ति के बाद उन जवानों की स्थितियां बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है। आप भी सशस्त्र सेना वाले परिवार से ही हैं। इस संबंध में आपके क्या विचार है ?

जवाब : हां, मैं आर्मी बेकग्राउंड से हूं। मेरे पिताजी और दादाजी दोनों आर्मी में रहे हैं। निश्चित तौर पर सैनिकों के प्रति और जवानों के परिवार प्रति मेरा पूरा रूझान रहेगा। विधायक रहते हुए जितनी मेरे से मदद बन पड़ेगी, मैं सहयोग करने के लिए तत्पर रहूंगा।

सवाल : सड़क, पानी, बिजली, शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा यह तो हर क्षेत्र की मूलभुत आवश्यकताएं है। इसकी आपके क्षेत्र के अंदर काफी कमी देखी जाती है। इनके लिए अब क्या क्या करने वाले हैं ?

जवाब : निश्चित तौर पर बहुत कमी देखी गई है। जो काम पिछले 15 साल में हुआ, वह अब हमें पांच साल में करके दिखाना है। पन्द्रह साल कमी को अब पांच साल में पूरी करने के लिए हमें तीन शिफ्टों में काम करना है और करेंगे। चुनाव जीतने से ज्यादा अब अब चुनाव के बाद काम करने की चुनौती है।

सवाल : जयवर्द्धन के माध्यम से भीम विधानसभा क्षेत्र के युवा व शहर के लोग यह जानना चाहते हैं कि आपकी कौनसे खेलों में रुचि है? मनोरंजन में खेल, गाना सुनने, फिल्म देखने, मोबाइल चैटिंग में से आपको क्या करना पसंद है ?

जवाब : मैंने बचपन में बहुत क्रिकेट खेला हैं। मैं क्रिकेट का बहुत अच्छा खिलाड़ी रहा हूं। जहां भी मुझे मौका मिलता हैं मैं खेल खेलने के प्रयास में रहता हूं।

सवाल : खेल के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सामग्री की काफी कमी रहती हैं इसके लिए आप क्या करेंगे ?

जवाब : मैं 2002 में रावत समाज में नगर मंडल का अध्यक्ष बना था। तभी मैंने क्रिकेट के किट कई गांवों में बांटे। जो भी खेलकूद में हैं, उसे प्रोत्साहन देना चाहिए। अगर बच्चा पढ़ाई में कमजोर हैं तो वह खेल के माध्यम से भी अपना कॅरियर बना सकता हैं। खेलों को बढ़ावा देने में मेरा पूरा सहयोग रहेगा।

सवाल : भाजपा अक्सर राम मंदिर बनाने की बात करती रही हैं और हाल ही में कांग्रेस के डॉ. सीपी जोशी ने भी कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला आते ही कांग्रेस राम मंदिर बनवाएगी। क्या कांग्रेस भी अब राम मंदिर का नाम लेकर चुनाव जीतना चाहती हैं ? इस मुद्दे पर आपका क्या विचार हैं ?

जवाब : हम भी हिंदु हैं हम भी आस्तिक हैं हम भी राम कृष्ण सारे भगवान को मानते हैं। हम तो कहते हैं राम राज लाया जाए। राम मंदिर उसमें अपने आप दिल में बनता हैं बाकी कोर्ट जो कहेगी वो सर्वमान्य हैं।

सवाल : कांग्रेस पार्टी के ही नेता कपिल सिब्बल राम मंदिर के विरोध में वकालत कर रहे हैं इसमें आपका क्या कहना है ?

जवाब : कपिल सिब्बल एक वकील हैं और कांग्रेस के नेता भी हैं। एक वकील के लिए तो मर्डर के क्लांइट भी होते हैं और गंभीर से गंभीर अपराधी के भी वकील बनते हैं। राम मंदिर के विरोध में कपिल सिब्बल का वकील के नाते अपना स्टेण्ड हो सकता है,मगर कांग्रेस पार्टी राम मन्दिर के विरोध में नहीं हैं।

सवाल : अंत में आप जयवर्द्धन के माध्यम से जनता को क्या संदेश देना चाहेंगे, विशेषकर युवा वर्ग जिसे आप से काफी अपेक्षा है उन्हें आप क्या कहना चाहेंगे ?

जवाब : मेरी यहां के युवाओं से तो विशेष तौर पर यह अपील है कि जिन्हें पन्द्रह साल से यहां के पूर्व विधायक ने गलत राह पर पटक दिया था आप लोग वापस मुख्य धारा में आये, अच्छे रस्ते पर चलने वाले को एक दिन मंजिल अवश्य मिलती है और जो भी सकारात्मक सहयोग मुझसे चाहियेगा मैं अवश्य करूंगा, रोजगार के लिए उपाय करेंगे,कुछ कोचिंग में हेल्प मिल सके। हम सकारात्मक कार्यो में हमेशा सहयोग करेंगे। गैंगवार, भू-माफिया व शराब माफिया में भटके हुए युवाओं को हम सही मार्ग पर लाने का भरपूर प्रयास करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में और सेना के क्षेत्र में युवाओं को प्रत्साहित करेंगे जिससे हमारे क्षेत्र का नाम रोशन हो।

कड़ाके की ठंड में संकल्प सहित गोदड़े में घुसने का दिन

बीती रात कड़कड़ाती ठंड में एक भट्‌टी पर चढ़े गरमागरम दूध के कड़ाव के सामने, देसी घी की जलेबी का दोना लिए, दूध का बेसब्री से इंतजार कर रहे 'लाला तोंदमलजी' धरा गए। मेरी आदत है कि जाते साल में मिलने जुलने वालों से पूछ ही लेता हूं- 'और भैया, नए साल के लिए आपका क्या संकल्प है ?' बस यही लालाजी से भी पूछ लिया।

ठंड ज्यादा थी इसलिए लालाजी ने गर्मी तो नहीं खाई, मगर लगभग चिढ़ते हुए बोले- 'यार तुम जल कुकड़ो की ऐसी नजर लगी है कि मेरा वजन कम नहीं हो पा रहा। सोचता हूं नए साल की पहली सुबह से ही मॉर्निंग वॉक पर निकल जाऊं।' यह सुन जैसे ही मैंने उन्हें कनखियों से देखा, वे तुरंत ताड़ गए कि मैं उन्हें पिछला साल याद दिलाने वाला हूं, इसलिए तपाक से बोले- 'लेकिन यार, पिछले साल भी यही मुश्किल संकल्प ले तो लिया था, मगर उस दिन भी बहुत ज्यादा ठंड पड़ रही थी, इसलिए मेरे साथ खुद संकल्प भी गोदड़े के भीतर ही जमा रह गया।'

यह कहकर मुझे भरोसे के झांसे में आता देख वे फिर बोले- 'देखों, इस बार फिर कोशिश करता हूं, पर तुम पीछे मत पड़ जाना यार।'

अब बोलने की बारी मेरी थी, सो मैंने आदतन उनके तोंदू पेट तथा हाथ में दो किलो जलेबी की प्लेट की ओर इशारा करते हुए कहा- 'ऐसे तो आपसे नहीं हो पाएगा भैयाजी।'

यह सुनकर वे 'इनटोलरेंट' हो गए, बोले- 'मेरे पेट या वजन से तुमको क्या ? मैं जमाने की चिंता में दुबला क्यों होऊ। तुम डेढ़ पसली हो तो मुझे तो कोई तकलीफ नहीं, फिर मैं डेढ़ क्विंटल पसली होऊ तो तुमको क्या दिक्कत ?' मुझ पर रौब जमता देख वे फिर बोले- तुम न खाओ और मुझे भी न खाने दो। तुम क्या 'न खाऊंगा, न खाने दूंगा' वाले चौकीदार हो ? मुझ पर सवाल दाग कर उन्होंने एक किलो जलेबी का और ऑर्डर दे दिया। इस बार ऑर्डर देते वक्त उनके चेहरे पर मुझे दुबले पतले सींकड़े पहलवान के प्रति हिकारत का थाव था।

उनकी जोरदार दलील के आगे मैं भी सुन्न घुट्ट हो गया। बात तो वे सईसट बोल रहे थे। मुझे भी लगा कि वे संकल्प ही क्या जो पूरे हो जाए। संकल्प, वादे, वचन तो महज मंचों से की गई घोषणाओं का आंतरिक स्वरूप ही है। हम जब 'सत्यनारायण भगवान की कथा' या छोटी मोटी पूजा भी करवाते हैं, तो पंडितजी हाथ में जल, अक्षत, कुमकुम देकर संकल्प छुड़वाते हैं। पूजा में स्वर्ण दान, गौ दान, 25 ब्राह्मणों को भोजन, द्रव्य दक्षिणा का संकल्प। मगर अपन भी 'यथाशक्ति' की आड़ में सारे संकल्प भूल जाते हैं। फिर तोंदमलजी को भी तो 'यथाशक्ति' का लाभ मिलना चाहिए।

बोलो- मिलना चाहिए कि नहीं मिलना चाहिए।

मुकेश जोशी
उज्जैन
mukeshjoshi61@gmail.com

पछतावा

आस्ट्रेलिया की ब्रोनी वेयर कई वर्षों तक कोई Meaningful काम तलाशती रहीं, लेकिन कोई शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव न होने के कारण बात नहीं बनी।

फिर उन्होंने एक हॉस्पीटल की राहत देखभाल ईकाई में काम करना शुरू किया। यह वो ईकाई होती है, जिसमें बहुत बीमार या अंतिम चरण वाले मरीजों को भर्ती किया जाता है। यहां मृत्यु से जुझ रहे लाईलाज बीमारियों व असहनीय दर्द से पीड़ित मरीजों के मेडिकल डोज को धीरे- धीरे कम किया जाता है और काउंसलिंग के माध्यम से उनकी आध्यात्मिक और विश्वास चिकित्सा की जाती है, ताकि वे एक शांतिपूर्ण मृत्यु की ओर उन्मुख हो सके।

ब्रोनी वेयर ने ब्रिटेन और मिडिल ईस्ट में कई वर्षों तक मरीजों की काउंसलिंग करते हुए पाया कि मरते हुए लोगों को कोई न कोई पछतावा ज़रूर था।

कई सालों तक सैकड़ों मरीजों की काउंसलिंग करने के बाद ब्रोनी वेयर ने मरते हुए मरीजों के सबसे बड़े पछतावे या खेद में एक कॉमन पैटर्न पाया।

जैसा कि हम सब इस सार्वभौमिक सत्य से वाकिफ हैं कि मरता हुआ व्यक्ति हमेशा सच बोलता है, उसकी कही एक एक बात इम्पीफनी अर्थात ईश्वर की वाणी जैसी होती है। मरते हुए मरीजों के इपिफनी को ब्रोनी वेयर ने 2009 में एक ब्लॉग के रूप में रिकॉर्ड किया। बाद में उन्होनें अपने निष्कर्षों को एक किताब THE TOP FIVE REGRETS of the DYING के रूप में प्रकाशित किया। छपते ही यह विश्व की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब साबित हुई और अब तक लगभग 29 भाषाओं में छप चुकी है। पूरी दुनिया में इसे 10 लाख से भी ज़्यादा लोगों ने पढ़ा और प्रेरित हुए।

ब्रोनी द्वारा सूचीबद्ध पांच सबसे बड़े पछतावे संक्षिप्त में निम्न है-

1. काश! मैं दूसरों के अनुसार न जीकर अपने अनुसार ज़िंदगी जीने की हिम्मत जुटा पाता।

यह सबसे ज़्यादा कॉमन रिग्रेट था। इसमें यह भी शामिल था कि जब तक हम यह महसूस कर पाते हैं कि अच्छा स्वास्थ्य ही आज़ादी से जीने की राह देता है, तब तक यह हाथ से निकल चुका होता है।

2. काश! मैंने इतनी कड़ी मेहनत न की होती?

ब्रोनी ने बताया कि उन्होंने जितने भी पुरुष मरीजों का उपचार किया, लगभग सभी को यह पछतावा था कि उन्होंने अपने रिश्तों को समय न दे पाने की ग़लती मानी। ज़्यादातर मरीजों को पछतावा था कि उन्होंने अपना अधिकतर जीवन अपने कार्यस्थल पर खर्च कर दिया। उनमें से हर एक ने कहा कि वे थोड़ी कम कड़ी मेहनत करके अपने और अपनों के लिए समय निकाल सकते थे।

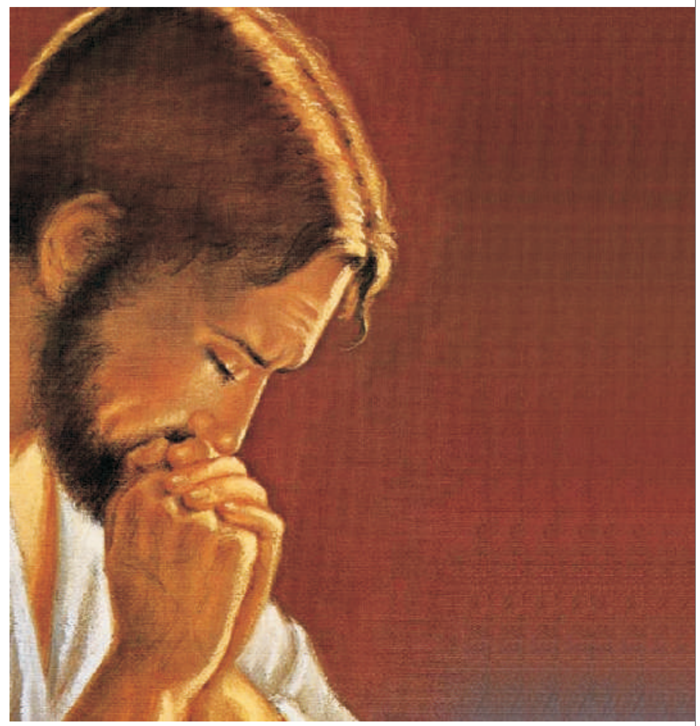

3. काश! मैं अपनी फीलिंग्स के इज़हार की हिम्मत जुटा पाता।

ब्रोनी वेयर ने पाया कि बहुत सारे लोगों ने अपनी भावनाओं का केवल इसलिए गला घोंट दिया, ताकि शांति बनी रहे। परिणाम स्वरूप उनको औसत दर्जे का जीवन जीना पड़ा और वे जीवन में अपनी वास्तविक योग्यता के अनुसार जगह नहीं पा सके। इस बात की कड़वाहट और असंतोष के कारण उनको कई बीमारियां हो गई।

4. काश! मैं अपनों अपने दोस्तों के सम्पर्क में रहा होता।

ब्रोनी ने देखा कि अक्सर लोगों को मृत्यु के नजदीक पहुंचने तक अपनों के प्यार और पुराने दोस्ती के पूरे फायदों का वास्तविक एहसास ही नहीं हुआ था। अधिकतर तो अपनी ज़िन्दगी में इतने उलझ गये थे कि उनकी कई वर्ष पुरानी गोल्डन फ्रेंडशिप उनके हाथ से निकल गई थी। उन्हें अपनी दोस्ती को अपेक्षित समय और ज़ोर न देने का गहरा अफ़सोस था। हर कोई मरते वक्त अपने नज़दीकियों और दोस्तों को याद कर रहा था।

5. काश! मैं अपनी इच्छानुसार स्वयं को खुश रख पाता।

आम आश्चर्य की यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात सामने आई कि कई लोगों को जीवन के अन्त तक यह पता ही नहीं लगता है कि खुशी भी एक चॉइस है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि खुशी वर्तमान पल में है।

ऋण माफी नहीं स्थायी समाधान, आत्मनिर्भर बनाने की है जरूरत

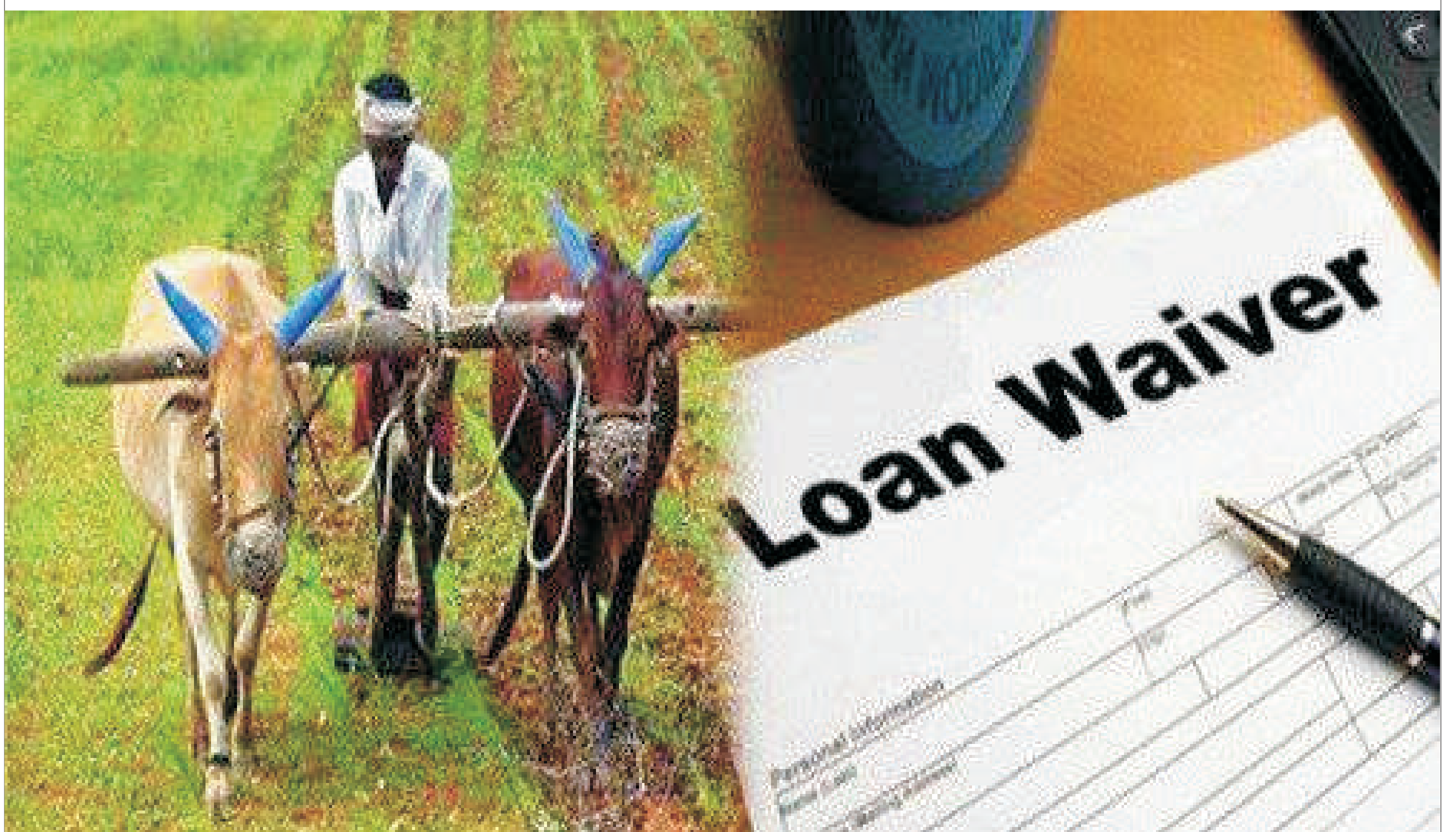

देश में पिछले कुछ वर्षों से किसानों की ऋण माफी चुनाव जीतने का अचूक सूत्र बन गई है। पिछले दो वर्षों में हुए आठ राज्यों के विधानसभा चुनाव इसका जीवंत उदाहरण हैं। इन आठ राज्यों के विधानसभा चुनावों में उसी पार्टी को बहुमत मिला, जिसने किसानों की कर्ज माफी का आकर्षक वादा किया। कांग्रेस पार्टी ने अभी हाल ही में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में किसानों की ऋण माफी का चुनावी घोषणा पत्र में वादा किया था। जिसके कारण पार्टी को तीनों राज्यों में किसानों का अप्रत्याशित बहुमत मिला। कर्जमाफी आज चुनाव जीतने का ट्रायल एंड टेस्ट फॉर्मूला बन गया है। इस फार्मूले से देश की राजनीतिक पार्टियों को जबरदस्त जीत मिल रही है, लेकिन देश की अर्थव्यवस्था हार रही है। इस पर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन समेत तेरह अर्थशास्त्रियों ने चिंता व्यक्त करते हुए यह अपील की है कि राजनीतिक दल अपने चुनावी घोषणा पत्र में ऋण माफी जैसे लोकलुभावन वादे ना करें।

अर्थशास्त्रियों ने लगातार ऋण माफी से अर्थव्यवस्था की रफ्तार धीमी होने की आशंका जताई है। रघुराम राजन ने चुनाव आयोग को चिट्ठी लिखकर भी कहा है कि कर्जमाफी जैसे मुद्दे चुनावी वादों में शामिल नहीं होने चाहिए। यह देश का दुर्भाग्य है कि राजनीतिक पार्टियां, हर वह वादा कर देती हैं, जो चुनाव जीतने के लिए जरूरी है। देश में चुनावी वादों को घोषणा पत्र में जगह देने से पहले विशेषज्ञों से विचार विमर्श नहीं किया जाता है। ऋण माफी के वादों का बोझ अर्थव्यवस्था पर ऐसे ही बढ़ता रहा तो देश की अर्थव्यवस्था का पहिया पूरी तरह जाम हो जाएगा। ऐसी स्थिति में पूरे देश को बड़े आर्थिक संकट से गुजरना पड़ सकता है।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव के दौरान जेडीएस ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में यह अनुमान लगाया था कि राज्य के सभी किसानों का ऋण माफ करने के लिए लगभग 53,000 करोड़ रुपए का खर्च आएगा।

इसके लिए कर्नाटक सरकार ने 44,000 करोड रुपए की ऋण माफी की घोषणा कर दी थी, लेकिन हकीकत यह है कि छह महीनों में राज्य सरकार केवल 800 किसानों के ही कर्ज माफ कर पाई है। क्योंकि कर्नाटक जैसे राज्य के लिए इतना कर्ज माफ करना असंभव सा है। वित्त वर्ष 2016- 2017 के बजट में कर्नाटक सरकार की कुल आय 1,32,867 करोड़ रुपए थी, जबकि अभी वर्तमान में कर्नाटक के किसानों पर 53,000 करोड़ रुपए का कर्ज है। इस हिसाब से राज्य के किसानों का ऋण कर्नाटक सरकार की कुल आय के 40 फीसदी के लगभग है। अगर कर्नाटक सरकार 44,000 करोड़ रुपए का पूरा ऋण माफ करती है तो राज्य इससे गंभीर आर्थिक संकट में पड़ जाएगा। क्योंकि राज्य सरकार अपनी आय का 40 फीसदी कर्जमाफी में लगा देती है, तो बाकी के कार्यों के लिए बजट कहां से आयेगा ?

ऐसे में सरकार के पास किसानों के कुल कर्ज को माफ करने के तीन ही तरीके बचते हैं। पहला, सरकार अपने प्रशासनिक खर्च को बहुत कम कर दें। इसमें राज्य कर्मचारियों के वेतन का हिस्सा भी शामिल है। जाहिर है कर्मचारियों का वेतन से कटौती करना असंभव सा है। दूसरा, सरकार सामाजिक सुरक्षा और विकास योजनाओं पर होने वाले खर्च को कम कर दें। जिसमें चिकित्सा, सड़क, बिजली और पानी जैसी आधारभूत जरूरतें भी शामिल हैं। राज्य के विकास की गति मंद होने के नुकसान के कारण ऐसा करना भी संभव नहीं है। तीसरा, सरकार राजकोषीय घाटे की पूर्ति के लिए जनता पर अतिरिक्त कर लगाए। यानी ऋण माफी के लिए तीनों ही उपाय असंभव से हैं।

वर्ष 2017 में उत्तरप्रदेश सरकार ने छोटे किसानों का 36,559 करोड़ का ऋण माफकिया था। इसके बाद महाराष्ट्र, पंजाब और तमिलनाडू की सरकारों ने भी किसानों की कर्ज माफी की घोषणा की थी। आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू और पंजाब इन पांच राज्यों में ऋण माफी से राजकोषीय घाटा 1,07,700 करोड़ और बढ़ जाएगा, जो मौजूदा वित्त वर्ष की जीडीपी के 0.65 फीसदी के बराबर है। जबकि इन पांच राज्यों का पहले से ही राजकोषीय घाटा लगभग 5 लाख करोड़ रुपए है, जो देश की मौजूदा जीडीपी के तीन फीसदी के बराबर है। यही कारण है कि ऋण माफी के कारण बढ़ा हुआ राजकोषीय घाटा देश की विकास दर को प्रभावित करता है। कर्ज माफी की घोषणाओं का देश के बैंकिंग सेक्टर पर भी बुरा असर पड़ता है, जिससे बैंकों को लोन रिकवर करने के लिए खासी मशक्कत करनी पड़ती है। किसानों ने बैंकों को कर चुकाना भी अब कम कर दिया है। क्योंकि किसान सरकारों से ऋण माफी के बाद उम्मीद लगाए रहते हैं। इसीलिए सरकारों की किसानों को कर्ज

माफी के आश्वासन की एक गलत परंपरा का जन्म हो गया है। अब किसान इस भरोसे में कर्ज चुकाने से बचता है कि कोई न कोई सरकार एक दिन उसका यह ऋण माफ कर देगी। इसीलिए पार्टियां किसानों को वोट बैंक में बदलने के लिए कर्ज माफी जैसे वादे करती हैं।

यही कारण है कि कृषि क्षेत्र से जुड़ा बेड ऋण लगातार बढ़ता जा रहा है। वित्त वर्ष 2015-16 तक कृषि क्षेत्र से संबंधित बेड ऋण 48,800 करोड़ रुपये था, जो वित्त वर्ष 2016-17 में बढ़कर 60,200 करोड़ हो गया। वहीं, अगले वित्त वर्ष 2017-18 में कृषि क्षेत्र से संबंधित बेड ऋण बढ़कर 83,153 करोड़ रुपए हो गया। जबकि वित्त वर्ष 2012-13 में कृषि से संबंधित बेड ऋण सिर्फ 24,800 करोड रुपए था। इस हिसाब से देखा जाए, तो कृषि क्षेत्र से संबंधित बेड ऋण के अब तक 250 फीसदी की दर से वृद्धि हुई है। जो बैंकों के कुल एनपीए का लगभग नौ फीसदी है। ऋण माफी के चुनावी वादे बढ़ते हुए बेड ऋण के सबसे बड़े कारक हैं। लगातार कर्ज माफी से किसानों को भविष्य में ऋण मिलना और भी मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि जिन किसानों का ऋण सरकार माफ करती है। वह डिफॉल्टर की श्रेणी में आ जाते हैं। तब ऐसे किसानों का क्रेडिट स्कोर खराब होने से, उन्हें दोबारा बैंकों से ऋण लेने में खासी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। खेती के लिए ऋण ना मिलने से इसका सीधा प्रभाव उत्पादन पर पड़ेगा। किसानों की सरकारों को मांग समग्र कृषि नीति लागू कर सक्षम बनाने को लेकर होनी चाहिए। ताकि किसान कृषि निवेश के लिए अधिकाधिक ऋण ले सकें और उस ऋण को समय पर चुका भी सके, लेकिन ऋण माफी किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का कोई स्थाई समाधान नहीं है। ऋण माफी के कारण डिफॉल्टर हुए किसान को जब बैंकों से द्वारा ऋण नहीं मिलेगा तो वह सेठ, साहूकार के पास जाएगा। यानी बिचौलियों की जिस पुरानी व्यवस्था को ध्यान में रखकर बैंकों का विस्तार किया गया था। वह लक्ष्य ही विरोधाभासी हो जाएगा।

देश को आजाद हुए आज 71 बर्ष बीत चुके हैं, लेकिन आज भी किसानों को कर्ज माफ करने के लिए हाथ जोड़कर विनती करनी पड़ती है। धरने प्रदर्शन और आंदोलन करने पड़ते हैं। जिस किसान की मेहनत से लोगों की थाली भरी हुई रहती है। उसी किसान की थाली आज खाली है, क्योंकि देश की सरकारों ने कभी इस बात को गंभीरता से नहीं लिया कि किसानों की आय में वृद्धि कैसे की जाए। सरकारों ने हमेशा किसानों को त्वरित राहत देकर वाहवाही लूटने का प्रयास किया है। आज राजनीतिक पार्टियों ने किसानों को चुनाव के समय इस्तेमाल किए जाने वाला वोट बैंक बना कर छोड़ दिया है, जबकि किसान हमेशा संसाधनों को लेकर जरूरतमंद ही रहा। क्योंकि देश की सरकारों ने भविष्य को ध्यान में रखकर नीति निर्माण नहीं किया। यही वजह है कि आज राजनीतिक पार्टियों के आकर्षक वादों का बोझ भारत के आम नागरिक को झेलना पड़ रहा है। क्योंकि देश का आम नागरिक सरकार को जो टैक्स देता है। उसी भारी भरकम टैक्स से पूरे देश में कल्याणकारी योजनाएं चलाई जाती है। किसानों की तरह इस देश का आम नागरिक भी काफी परेशान है। अगर भविष्य में कोई पार्टी यह चुनावी वादा कर दें कि वह सत्ता में आने के बाद होम ऋण, शिक्षा ऋण सहित सभी लोन माफ कर देगी, तो इससे देश की अर्थव्यवस्था का क्या हाल होगा? मार्च 2017 तक किसानों पर करीब चौदह लाख करोड़ रुपए का ऋण था। वहीं नागरिकों पर विभिन्न प्रकार का कुल बीस लाख करोड़ रुपए का ऋण है।

आरबीआई की रिपोर्ट के अनुसार देश में ग्यारह लाख करोड रुपए का होम ऋण, 70 हजार करोड़ रुपए का शिक्षा ऋण, दो लाख करोड़ रुपए का ऑटो व्हीकल ऋण और पांच लाख करोड़ रुपए का पर्सनल लोन ले रखा है। इतना ऋण माफकरना किसी भी सरकार के लिए असंभव है, लेकिन कल को कोई पार्टी चुनाव जीतने के लिए इस तरह के ऋण माफ करने का वादा करती है, तब अर्थव्यवस्था का क्या होगा? आजादी के बाद किसानों ने अपनी मेहनत से देश को खेती में आत्मनिर्भर बनाया है। आज हमारे देश की सरकारों को 135 करोड़ लोगों का पेट भरने के लिए किसी और देश की तरफ देखने की जरूरत नहीं है। इसका श्रेय सिर्फ और सिर्फ देश के किसानों को जाता है। देश के लिए किसानों की निष्ठा अमूल्य है, लेकिन सरकारों ने किसानों को लोकलुभावन वादों के जाल में फंसाकर उनकी उन्नति के मार्ग में बड़ा रोड़ा खडा कर दिया है। आज भी देश की सरकारों के पास किसानों के समग्र विकास और आय बढ़ाने के लिए कोई स्पष्ट नीति नहीं है।

अश्विनी शर्मा
छात्र परास्नातक सोशल वर्क
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
स्वतंत्र टिप्पणीकार
Mob. 9079006588
ashwinibhu6396@gmail.com

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - **अभिषेक माहेश्वरी** - 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
खमनोर - दिलीप श्रीमाली - 99285-60237
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

कर्जमाफी का चलन

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

विधानसभा चुनाव पूर्ण हुए, तीन राज्यों में कांग्रेस विजयी हुई। चलो अच्छा हुआ जो लोग पिछले 5 वर्षों से सड़क पर सिर्फ पुतले जला रहे थे, उन्हें भी अब पटाखे जलाने का मौका मिला। 5 वर्षों तक लगातार हार का मुंह देख रही कांग्रेस के लिए अब थोड़ी तसल्ली रही कि अध्यक्ष राहुल गांधी जिसे विपक्ष ने पप्पू समझा था, वो इस बार पास हो गया। चुनाव से पूर्व कांग्रेस ने किसानों से कर्ज माफी का वादा किया था, जिसे सत्ता में आते ही पूरा किया।

ऐसे में मुझे एक कहानी याद आ रही है। राजा भोज के दरबार में एक गरीब युवक अपनी मां की बीमारी का इलाज निर्धनता के कारण नहीं करा पाने पर राजा से मदद मांगने के लिए उपस्थित हुआ। राजा ने उस युवक को एक हजार स्वर्ण मुद्राएं देने के लिए कोषाधिकारी को कहा, मगर युवक ने एक हजार स्वर्ण मुद्राएं लेने से मना कर दिया और कहा कि सिर्फ 50 स्वर्ण मुद्राओं की ही उसे जरूरत हैं। यह देखकर राजा के साथ सभी दरबारी भी आश्चर्य में पड़ गए। जब राजा ने उसे अतिरिक्त स्वर्ण मुद्रा नहीं लेने का कारण पूछा तो उसने कहा कि अभी मां के इलाज़ के लिए मुझे सिर्फ 50 मुद्राओं की ही जरुरत है और राज्य से अतिरिक्त धन प्राप्त कर मैं अपनी आजीविका कमाने के प्रति भी लापरवाह हो जाऊंगा। राज्य के कोष की यही राशि मेरे जैसे किसी अन्य जरूरतमंद के आपातकाल में काम आ सकेगी। यह सुनकर राजा के साथ पूरा दरबार युवक की प्रशंसा करने लगा।

यह कहानी राजा भोज के दरबार की है। आजकल इस तरह की ईमानदारी दुर्लभ है। आज के लोकतंत्र में तो सरकारी सम्पत्ति का अनावश्यक दुरुपयोग हर तरफ हो रहा है। कर्ज माफी के बाद कई किसान जिन्होंने ईमानदारी से अपना ऋण जमा कराया, वह बड़ी असमंजस में पड़े हुए हैं कि क्या उन्हें भी इस ऋणमाफी का फायदा मिलेगा या नहीं? या उन्हीं बेईमानों को लाभ मिलेगा, जिन्होंने कई वर्षों से ऋण लेकर के पुन: जमा ही नहीं कराया। इस

ऋणमाफी के बाद सब जगह यह चर्चा है कि राज्य सरकार डिफॉल्टर किसानों की बड़ी हितेषी है। जिस तरह बड़े बड़े बैंक डिफॉल्टर को देश से बाहर भगाने का इल्जाम भाजपा पर लगा, तो आखिर डिफॉल्टर को फायदा दिलाने का श्रेय सिर्फ भाजपा को ही क्यों मिले? कांग्रेस ने भी मध्यप्रदेश व राजस्थान के डिफॉल्टर को प्रोत्साहित करने के लिए कर्जमाफी का बड़ा फैसला लिया। इसके बाद से देश में बैंक डिफॉल्टर की इज्जत काफी बढ़ गई है। उन्हें अब एक बड़े वोट बैंक की तरह देखा जा रहा है। ऐसे माहौल में ईमानदारी से अपना ऋण जमा कराने वाले लोग अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे हैं। उनका तो धन भी गया और धरम भी। क्योंकि लोन समय पर जमा कराने वाले को अब लल्लू समझा जा रहा है।

यह लगने लगा है कि अब देश में ऋण जमा कराना बहुत बड़ा अपराध है। समय पर अपनी किस्ते जमा कराने वालों पर हो सकता है कि कानूनी कार्रवाई भी हो। क्योंकि जब नेता से लगा कर बड़े बड़े उद्योगपति तक बैंक का पैसा डकारने में अपनी इज्जत समझ रहे हैं, तो कांग्रेस ने वही सम्मान अब किसानों को भी देने का प्रयास किया। यही रवैया बना रहा, तो आने वाले समय में अखिल भारतीय बैंक डिफॉल्टर समाज बनेगा, जो सभी चुनावों में निर्णायक सिद्ध होगा। इस तरह कर्जमाफी के फैसले के बाद सभी कर्जदारों को बैंक का पैसा दबाने को प्रोत्साहन मिलेगा।

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम-श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

जयवर्द्धन
के विशेषांक
टेलीफोन हेल्पलाइन
मात्र 50 रुपए
में प्राप्त करें।

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

नगर की ख्यातनाम शख्सियत सेठ भगवानदास जी सनाढ्य

मेवाड़ में नाथद्वारा, कांकरोली की भूमि प्रभु श्रीनाथजी, श्री द्वारकाधीश जी के विराजमान होने से बृजभूमि और बृजवासियों की भक्ति और सखा भाव के रस में आनन्द और उल्लास की भूमि रही है। मंदिर सेवा में मस्त बृजवासी सुख-दु:ख के अहसास से ऊपर उठ ठाकुरजी की सेवा चाकरी में दुनिया की तमाम खुशियां पा लेते थे। आज अर्थ प्रदान युग से उलट गुजरा जमाना मुफलिसी और तकलिफ़ो का जमाना था।

देश गुलामी की ज़जीरों में कैद था और 1857 के गदर में आजादी के संघर्ष का बिगुल बज चुका था। देश के महानगर, नगर या गांव हो गुलामी से आजादी की हवा में सांस लेने के लिए संघर्षरत थे। गरीब और साधारण परिवार दो जून की रोटी खाकर भी अपने आप को लखपति समझ लेता था।

बृज संस्कृति मैं तो आज के आनंद की जय की जयकार में ही आनंद विभौर हो उठता। उस वक्त तो ये जयघोष ऊर्जा का नित नया संचार कर देता था। वर्तमान में जीना उस युग के आदमी का स्वभाव था, आज है, जो राज है कि उक्ति को चरितार्थ करता था, मगर आज जाने उस युग के बृजवासी सनाढ्य परिवार में विभूति के रूप में जन्मे सेठ भगवानदासजी के संघर्षमय, मगर सेवाभावी उदार व्यक्तित्व के बारे में भगवानदासजी का जन्म नाथद्वारा में बृजवासी सनाढ्य जाति के अत्यंत साधारण परिवार में पिता श्री मथुरादास जी दीक्षित के यहां 2 जुलाई 1857 ई. (आषाठ वदी दूज विक्रम संवत 1914) को हुआ।

आपकी प्रारंभिक पढ़ाई नाथद्वारा में ही हुई। आप जब केवल 10 वर्ष के थे, तभी आपके पिता का देहान्त हो गया। परिवार के मुखिया का ना होना साधारण परिवार की अर्थव्यवस्था पर भी करारा झटका देने जैसा था, लेकिन माता ने अपने दो पुत्र और एक पुत्री की परवरिश के लिए सारी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली और मेहनत मजदूरी करके परिवार का पेट पालने लगी, मगर आर्थिक स्थिति ना सुधरती देख भगवानदासजी ने भी मंदिर सेवा करने का निश्चय किया, तो श्रीजी हूज़ूर ने मंदिर सेवा में बालक भगवान दास को रख लिया। कहते कि भगवानदास जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे, आपकी मेहनत और लगन को देख श्री नाथद्वारा मंदिर के अधिकारी सेठ चरणदास जी बहुत प्रभावित हुए। पन्द्रह वर्ष की आयु में श्री चरणदास जी की सिफारिश से सेठ गोविंदराम जी, द्वारकादास जी 1872 ई. को भगवानदास जी को अपने साथ बम्बई ले गए, जहां आप उनके आड़त के व्यापार में सहयोग करने लगे और व्यापार के गुर सीखने लगे। भगवानदास जी दिनभर की मेहनत मशक्कत के बाद भी रात को पढ़ाई किया करते थे और कहते हैं कि नींद ना आ जाए, इसलिए अपने बालों की चोटी को खूंटी से डोरी बांध कुर्सी पर बैठकर विद्या अध्ययन करते थे।

सेठ गोविंददास जी के सहयोग से आपने तीन बार दक्षिण की यात्रा की, वहां कई सेठ साहुकारों से सम्पर्क हुआ। हैदराबाद यात्रा में सेठ लक्ष्मीदासजी के करोड़पति घराने में उनके चार पुत्रो के बंटवारें के सम्पति विवाद में भगवानदास जी को बंटवारा सही ढंग और शान्तिपूर्ण बिना किसी विवाद से करवाने की जिम्मेदारी सौंपी, सो आपने सभी को सन्तुष्ट करके चारों पुत्रों की सम्पति का हिस्सा बंटवारा करवाया, तो मेहनताने के रूप में सेठ लक्ष्मीदास जी ने उन्हें हीरे, जवाहरात की चार कटोरी सभी चार भाइयों के हिस्से से दी। सेठ के बड़े पुत्र की बहु ने बंटवारे से खुश होकर भगवानदास जी को गोकुल में ठाकुरजी का मंदिर बनवाने की जिम्मेदारी सौंपी और उसके एवज में आपको उस वक्त डेढ़ लाख रुपए मेहनताने के दिए और सभी भाइयों के परिवार ने मिलकर ठाकुर जी की प्राणप्रतिष्ठा करवाई।

बम्बई में चौदह वर्ष तक कड़ी मेहनत एवं योग्यता से भगवानदास जी आर्थिक रूप से सम्पन्न हो गए। 20 वर्ष की आयु में भगवान दास जी का विवाह कांकरोली रेती मोहल्ला निवासी गोवर्धन लाल जी पंड्या की पुत्री सुश्री आनंदी पण्ड्या से हुआ।

1886 में मुम्बई में प्लेग की बीमारी फैलने के कारण से 30 वर्ष की आयु में पुन: नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में तिलकायत श्री गोवर्धनलाल जी महाराज के आग्रह पर मार्फत अधिकारी श्री कृष्ण दास जी के हस्ते सेठ चरणदासजी के सानिध्य में उच्च पद पर आसीन हुए। आप सहृदय व्यक्ति थे और सदा बृजवासी समाज के जरूरतमन्दो की मदद करते और अपने व्यक्तित्व के कारण मंदिर में महाराज श्री के सलाहकार भी थे।

कहते हैं कि आपने ही मंदिर मण्डल और कोटा वाले महाराज से विशेष सिफारिश कर अपने प्रयास से बृजवासी छात्रों की छात्रवृति और मंदिर के कर्मचारी व विधवा महिलाओं के जीवन यापन के लिए मंदिर से खाद्य सामग्री (सीधा) प्रारंभ करवाया, जो आज भी समाजजनों को मिलता है। सेठ भगवानदास जी बाद में महाराज श्री से आज्ञा ले नाथद्वारा से कांकरोली आकर बस गए।

प. बिन्दुलालजी पण्ड्या ने बताया कि कांकरोली मंदिर के पुरूषोत्तमजी महाराज के स्वर्गवास होने पर उनकी पत्नी पद्मावती बहुजी ने महाराज की स्मृति में हमारे पूर्वज गोर्वधनलाल जी पण्ड्या (भगवानदासजी के ससुर) को भूमि दान देने का आग्रह किया तो आपने संकोच वंश इन्कार कर दिया, मगर अपने दामाद से सलाह ले मंदिर के पीछे झील किनारें से सटी भूमि समाज हित में सनाढ्य समाज को दान देने का बहूजी से आग्रह कर समाज में जमीन दान करवाई और उस पर भगवानदास जी ने अपने हाथों से हवेली का निर्माण करा समाज को सुपुर्द कर दी, जो आज भी पंचायत की हवेली के नाम से मौजूद है।

सेठ भगवानदास जी ने अपने लिए एक बड़ी हवेली कांकरोली नगर में बनवाई और पीछे खेती बाड़ी की भूमि खरीद अपने हुनर से सुन्दर बावड़ी का भी निर्माण करवाया। हवेली में 40 कमरें और दो दीवान खानें भी बनवाए और उस जमाने में बेल्जियम से दीवान खाने की अलमारियों पर लगवाने के दर्पण मंगवाए। इसका नक्शा आपने बम्बई रहते अंग्रेज नक्शानवीस से बनवा हवेली भी बम्बई में बनवाने की योजना बनाई थी। हवेली के पीछे विशाल बाड़ी व परकोटे बनवाए। कहते हैं कि बाजार से सिर्फ़ नमक लाना पड़ता था। पशुधन और खेती बाड़ी नौकर चाकर संभालते थे। रचके के बीजों की पैकिंग कर गुजरात तक सप्लाई की जाती व रचका नाथद्वारा मंदिर में सप्लाई किया जाता था। आज भी ये हवेली सेठ भगवानदास जी की हवेली के नाम से नगर में प्रसिद्ध है और वर्तमान में सेठ भगवानदास मार्केट आज भी आपके नाम को अमर और आपके साथ ही समाज को भी गौरवान्वित कर रहा है।

मुझे किसी शायर का शेर याद आता है...

इत्र से कपड़े महकाना बड़ी बात नहीं,
मज़ा तो तब है, जब तेरे किरदार से खुशबू आए।

दुनिया में कुछ असंभव नहीं, मगर करने की जिद्द हो, किसी ने कहा है कि गरीब घर में पैदा होना बुरा नहीं, मगर ताउम्र गरीब रहना बुरा है। आपने 30 वर्ष की उम्र में वो कर दिखाया जो मिसाल बनकर आपके किरदार को आज भी महका रहा है।

उनका 75 वर्ष की उम्र में सन् 1932 में निधन हो गया। उनके परिवार में अब उनकी पत्नी, दो पुत्र हरिदास, द्वारकादास, चार पुत्रियां और भरा पूरा परिवार छोड़ गए।

उन्होंने मेहनत, लगन एवं कर्मशिलता से नगर में और समाज में दिवास्वप्न दिखने वाले नगर सेठ की उपाधी को हासिल किया और समाज हित के कार्य किए, जो नई पीढ़ी के युवाओं को ज़िन्दगी में कुछ करने की प्रेरणा और जज्बा देंगे। आपकी चौथी पीढ़ी में जन्म लेकर माटी का लाल में आपकी उपलब्धियों को लिखकर मैं भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हुए नगर की ख्यातनाम शख्सियत को कोटि कोटि नमन करता हूं।

प्रस्तुति

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मोबाइल : 94146 21730

गुमनाम शख्सियत

हर आदमी की ज़िन्दगी का एक लक्ष्य होता है। वो अपना रास्ता चुनता है। मानव स्वभाव संवेदनाओं से भरा होता है। दया, करूणा, अपनापन, संकट में इन्सानी पक्ष को धर्म बना कर कर्म करने की इच्छा शक्ति अन्तस की गहराई में होती है। कई लोग गुमनाम मसीहा की तरह मददगार बन अनजान ही रहते हैं। नाम की कोई भूख नहीं, ना प्रसिद्ध होने का ख्याल दिलोदिमाग में रखते हैं। ऐसे किरदारों को सामने लाने की मुहिम जयवर्द्धन पत्रिका अपने नए कॉलम गुमनाम शख्सियत के नाम से आप पाठकों के बीच ला रहा है, जो कई वर्षो से गुमनाम मददगार के रूप में समाज के काम आ रहा है। ये हमारी जिम्मेदारी है, ऐसे अनाम समाजसेवकों को समाज के प्रेरणादायक पृष्ठ को समाज के सामने लाए और इनसे प्रेरणा लेकर आप भी अभावग्रस्त मानवजाति के सहयोगी बनें। आपके आस पास भी अगर है ऐसी गुमनाम शख्सियत, जो समाज हित में नींव का पत्थर बन कर अपना दायित्व निभा रहे। तो उनके बारे में हमें लिख भेजिए या हमें सूचित करें।

सेवाभावी किन्नर पारसमणि नाज़र

कहते है कि किन्नर समुदाय की उत्पत्ति का श्रेय भगवान शंकर को जाता है। इसीलिए मान्यता है कि इनकी दुआओं और आशिर्वाद में इतनी शक्ति होती है, ये आपका जीवन खुशियों से भर सकता है। शादी विवाह, जन्म उत्सव पर इनका घर आना बरकत देता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बुद्ध ग्रह नपुसंक है। किन्नरों में इसका वास होता है। बुधवार के दिन किन्नरों का दिखना और यदि कोई किन्नर बुधवार के दिन आपको आगे चलकर धन (रूपया, सिक्का) दे तो कभी इन्कार नहीं करना चाहिए। उस सिक्के को पूजा स्थल पर और व्यापारिक प्रतिष्ठान पर गल्ले में रखने से धन में वृद्धि और भाग्य (नसीब) के चमकने की संभावना होती है।

कहते हैं कि कभी किन्नरों को परेशान नहीं करना चाहिए। इनके मुख से निकली बद्दुआ भी इन्सान को बरबाद कर देती है और दुआए आपकी जिन्दगी को आबाद कर देती है। इनको दिया दान कभी व्यर्थ नहीं जाता। इनको समाज में सम्मान की दृष्टि देखा जाता है। इसकी कई पौराणिक मान्यताएं है।

आज हम बात कर रहते हैं, इसी समाज के एक ऐसे समाजसेवी के बारे में जिसका नाम है पारसमणि नाजर। अपने गमों के अथाह सागर की गहराइयों की चिंता को त्याग कर दूसरों की हर पल हर दम सेवा करने के लिए तत्पर एक गुमनाम शख्सियत की सच्ची सेवा की सच्ची दास्तान को जो हमारे समाज को एक नई दिशा की ओर हमें अग्रसर करने की प्रेरणा देते हुए हमें नजर आती है।

राजसमंद के कांकरोली में जन्मे पारस मणि का जन्म एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ था। परिवार को खाने को मिले या ना मिले, यह एक सपने जैसा था। 10 साल बहुत मुश्किल से कटे। शरीर का अधूरापन लिए नाथद्वारा मैं अपने गुरु माता किन्नर प्रेम कुंवर के संपर्क में आने के बाद जीवन थोड़ा थोड़ा सुगम होता हुआ नजर आया। वक्त के साथ कुछ हालात भी बदले, लेकिन गरीबी के वो दिन मानो पारस मणि की जिंदगी में परछाई की तरह समाहित हो गए और एक सोच के साथ समाजसेवा और ऐसे लोगों की सेवा करने में अपना जीवन लगा देने का संकल्प आज 65 साल की उम्र में भी लगातार चल रहा है। समाजसेवा का पहला पड़ाव तब शुरू हुआ, जब बाड़मेर में भीषण बाढ़ आई थी। पूरा बाड़मेर जिला तहस- नहस हो गया था। तब पारस मणि नाथद्वारा के टैक्सी स्टैंड पर खड़ी हुई थी। वहां पर कुछ लोग बाड़मेर त्रासदी का चंदा मांग रहे थे। पारस मणि को भी उसमें मदद करने की इच्छा हुई और उन्होंने पूछ लिया क्या मैं भी इसमें अपना योगदान दे सकती हूं। वहां मौजूद लोगों ने हां मैं स्वीकृति दी मानों उनकी सेवा करने की इच्छा को जैसे किसी मृत शरीर में एक सांस का काम कर गई हो।

तत्काल उन्होंने खाद्य सामग्री बर्तनो कपड़ों कंबलों से भरे हुए दो लोडिंग ऑटो लेकर नाथद्वारा तहसीलदार के पास पहुंच गई। वहां पर तत्कालीन तहसीलदार साहब ने उन्हें कहा कि यहां से यह सब सामग्री कुछ रोज के बाद रवाना की जाएगी। आप ऐसा कीजिए राजसमंद जाकर कलक्टर साहब से मीलिए, वहां पर आज ही बाड़मेर के लिए एक ट्रक रवाना हो रहा है। पारस मणि तुरंत राजसमंद पहुंच गई और तत्कालीन जिला कलक्टर को वह सब सामग्री बाढ़ पीड़ितों के लिए समर्पित कर दी। जब कलक्टर साहब ने यह देखा तो वह बहुत ही भावपूर्ण मुद्रा में आ गए। उन्होंने कहा प्लीज आप सारी सामग्री के साथ एक साथ खड़े होकर फोटो खिंचवा लीजिए। हम इसको न्यूज पेपर में देना चाहते हैं, तो पारस मणि ने साफ मना कर दिया और कहा कि मैं यह सब नाम के लिए नहीं कर रही हूं। उसके बाद यह सिलसिला अनवरत चलता रहा।

अब जब भी किसी न्यूज पेपर में कोई ऐसे दिन दुखी के दर्द या किसी हादसे से हताहत लोगों की खबर पढ़ती है, तो स्वयं अपनी गाड़ी लेकर उनकी सेवा करने के लिए वहां उपस्थित हो जाती है और यथासंभव आर्थिक मदद राशन की मदद देकर उस परिवार को ढाढ़स बंधाकर आगे भी कुछ कार्य उसके लायक हो, तो करने की बात कह कर दबे पांव चली आती है। जोर का भीलवाड़ा में एक गमेती परिवार में जवान बेटा ट्रैक्टर के नीचे दबने से काल के ग्रास में समा गया, तब उस बुढ़ी मां और अनाथ बच्चों के लिए तत्काल मदद के लिए रवाना हो गए और अपनी हैसियत से ज्यादा वहां मदद करके अपनी डगर को चल निकली। ऐसे सैकड़ों लोगों की मदद के लिए हर समय, हर पल पारस मणि तैयार रहती है। हर साल गुंजोल चौराहे पर 20 दिवसीय राम रसोड़ा भी लगाया जाता है। उसमें यात्रियों के लिए सभी सुविधाओं से परिपूर्ण डोम लगाया जाता है, जो लोग रामदेवरा नहीं जा पाते हैं। उनको राम रसोड़ा के समापन के बाद लग्जरी बस द्वारा पांच दिवसीय तीर्थ यात्रा खाने पीने रहने की पूर्ण व्यवस्था के साथ निशुल्क करा कर अपनी सेवा धर्म निभाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। इन्होंने कभी स्कूल की शिक्षा ग्रहण नहीं की, लेकिन खुद ही थोड़ा पढ़ लिख कर अक्षर ज्ञान के सहारे आज सब कुछ आसानी से पढ़ लेती है। गरीब असहाय बच्चों की शिक्षा के प्रति अपनी एक अलग पहचान स्थापित करते हुए कई निर्धन बच्चों की आजीवन पढ़ाई की जिम्मेदारी खुद निर्वाह कर रही है। एक बच्चा अभी दसवीं क्लास में प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई कर रहा है और एक बच्ची सलूंबर में कॉलेज में पढ़ रही है। कई गरीब बच्चियों की शादी करा कर उनके मां बाप ना होने की चिंता को भी इन्होंने उनसे कई दूर कर दिया। यहां तक की उनके प्रसव काल के समय की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई। इसके लिए पारस मणि ने एक अलग मकान की व्यवस्था भी कर रखी है। इन सभी बच्चों और बच्चियों को अपने समाज के लोगों से हमेशा अलग रखती है, ताकि वह असहज महसूस ना करें।

हर वक्त कार में रहते जूते-स्वेटर

पारसमणि की कार में 200- 300 स्वेटर हर सर्दी में हमेशा तैयार रहते हैं, जो गरीब बच्चों में वितरित करती रहती है। गर्मी में 200- 300 जोड़ी जूतें बांटना उनकी भावुक छवि को उदार करता हुआ प्रतीत होता है। पारसमणि के पास अभी 15 किन्नरों का काफिला है। गौमाता की सेवा करना उनको काफी अच्छा लगता है। राजसमंद की झील को सदैव भरी हुई देखना इनकी इच्छा है। इनको श्रीदेवी, आमिर खान, अमिताभ बच्चन, राज कपूर काफी पसंद है। यह किन्नर समाज पर एक किताब निकालने की इच्छा रखती है और भविष्य की योजना के बारे में इनकी एक ही इच्छा है कि सरकारी जमीन मिले या खुद के रूपयों से एक जमीन को खरीदकर वहां एक मंदिर और एक आश्रम बनाकर अनाथ बच्चों व बेसहारा बुजुर्गो की सेवा के साथ ठाकुर जी की सेवा करें, वहीं आराम से अपना अंतिम समय खुशी खुशी निकाल सके।

प्रस्तुति :
राहुल दीक्षित, विजय शर्मा
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 90010-11755

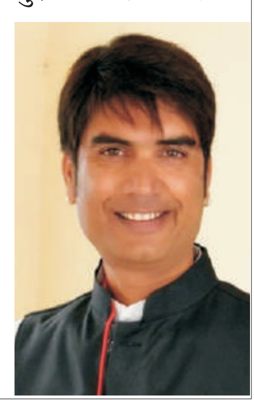

मेरा गांव और मेरे लोग

मेरा गांव जो कस्बे के बाद शहर और अब स्मार्ट सिटी बनने की होड़ में है। इसके बसने से लेकर आज तक ना जाने कितने महापुरुष इस धार्मिक नगरी कांकरोली में पैदा हुए और अपना जीवन व्यतीत कर परलोक सिधार गए। उन सभी आत्माओं को नमन करते हुए **जयवर्द्धन पत्रिका** के माध्यम से हमारे वरिष्ठ मार्गदर्शक व साहित्यकार **अफजल खां अफजल** उन लोगों के बारे में बताएंगे, जिन्हें पिछले 50-60 वर्षों पूर्व उन्होंने जैसा देखा, पाया और समझा, जो इस कांकरोली के सभ्रांत नागरिक हुआ करते थे, जिनके सद्कार्य और उदार हृदय ने कांकरोली के समाज को संवारा और इस दुनिया को छोड़ देवलोक गमन कर गए। ऐसी ही लगभग **200** दिवंगत आत्माओं के बारे में **जयवर्द्धन** पत्रिका **एक धारावाहिक** के रूप में प्रसारित करेगा। इसके तहत **अफजल खां अफजल** के साथ वरिष्ठ साहित्यकार **कमर मेवाड़ी, फतहलाल गुर्जर अनोखा, डॉ. राकेश तैलंग, ईश्वरचंद शर्मा, प्रमोद सनाढ्य, सूर्यप्रकाश दीक्षित** के सहयोग से एक के बाद एक नामचीन शख्सियत के जीवन दर्शन को प्रकाशित किया जाएगा।

अफजल खां अफजल

ब्रजभूषणलाल महाराज ने विश्व में दिलाई कांकरोली को ख्याति

शुद्धाद्वैत दर्शन की अनुगामी पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ के थे आचार्य

गोस्वामी ब्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोली नगरी के आधुनिक एवं पारम्परिक स्वरूप के समान्वित शिल्पकार थे। उदयपुर रियासत द्वारा प्रदत्त गुरूघर के प्रति श्रद्धा व आदर स्वरुप श्री द्वारकाधीश मंदिर को दिए गए विशेष अधिकारों का न्याय और विवेक सम्मत नेतृत्व करते हुए आपने इस नगर के आधारभूत ढ़ांचे को सुदृढ़ करने की दिशा में रेलवे लाइन और इम्पीरियल सी प्लेन सर्विस का संचालन करा कांकरोली को राष्ट्र स्तरीय पहचान दिलाई। वहीं स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में राजकीय व निजी स्तर पर चिकित्सा सेवा शुरू कर जनाकांक्षी व्यवस्थाओं की दिशा में कार्य किया। श्री बालकृष्ण विद्या भवन जैसे शिक्षण संस्थान और प्रयाग महिला विद्यापीठ व महिला सम्मेलन की परीक्षाओं के आयोजन द्वारा बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में आपने बालिका व महिला शिक्षा के क्षेत्र में भी चेतना का जागरण किया।

संस्थायी विकास की दिशा में नगरवासियों के साथ निरन्तर संवाद बनाए रखते हुए आपने राजतंत्र (उदयपुर महाराणा), धर्म तंत्र (श्री द्वारकाधीश मंदिर) व लोकतंत्र (कांकरोली नगरजन) के बीच अभूतपूर्व समन्वय स्थापित किया।

कांकरोली का इतिहास के रचयिता कंठमणि शास्त्री

प्रो. कंठमणि शास्त्री मूलतः बुंदेलखंड की पृष्ठभूमि और सागर जबलपुर से प्रवसित होकर पुष्टिमार्गीय तृतीय पीठ कांकरोली के बालकृष्णलाल एवं तत्पश्चात गोस्वामी ब्रजभूषणलाल जी महाराज द्वारा इस नगर में बसायी विद्या वारिधी परम्परा के नायाब रत्न थे। वे दक्षिणात्य तैलंग ब्राह्मण वंश के पोतकूर्चि गौत्र नामधारी थे। इनके पूर्वजों का मूल ग्राम राजमहन्द्री था। घड़ा मंडला सागर और दतिया नरेशों से सदैव सम्मानित शास्त्री वंश के प्रकांड वैदुष्य सम्पन्न कंठमणिजी कांकरोली की देह पर हीकरमणि के मानिन्द कहे जा सकते हैं। आज जहां चौपाटी पर राजनीति और समाजनीति की चर्चाओं के बीच यह शहर सुबह शाम जीवनदायी धड़कनों में बसता नजर आता है। एक समय यहीं ब्रजनिकुंज काव्य शास्त्र, विनोदेन साहित्य, संगीत कला मनीषियों की संगोष्ठियों और सार्थक चर्चाओं से आबाद रहा करते थे। जिसके नेतृत्वकर्ता थे श्री कंठमणिजी शास्त्री। आज शास्त्री मार्केट उस नगर पुरोधा के नाम को स्मरण करने एकमात्र अवशेष है। यह हमारी सांस्कृतिक विडम्बना है।

श्री द्वारकाधीश मंदिर की पुष्टिमार्गीय परम्परा दर्शन साहित्य सेवा प्रणालिकाओं के शास्त्रीय वार्ताकार, व्याख्याकार, विमर्शकार शास्त्रीजी ब्रजभूषणलालजी महाराज के गुरू सहकर्मी, आश्रित और अनेक मायनों में दिशा दर्शक भी रहे। वे कांकरोली विद्या विभाग, जिसके संस्थापक, संचालक गोस्वामी ब्रजभूषणलालजी महाराज के कुशल संचालक थे। कांकरोली के इतिहास के वे लेखक थे। एक प्रकार से इस नगर के जन और तृतीय पीठ की जुगलबंदी से बनती हुई सामाजिक समरचना के वे भाष्यकार थे। सम्प्रदाय प्रदीयालोक, पुष्टिमार्गीय दिग्दर्शन, पुष्टिमार्गीय वांड्मय और शताधिक शास्त्रीय आलेखों व पुस्तकों के रचयिता थे। देश केन्द्र उपनाम से वे कविता, लेखन में भी सिद्धहस्त थे।

नगरवासियों के लिए विचारणीय है कि जिस उद्‌भट्ट विद्वान को कांकरोली नगर की हवाओं में सांस्कृतिक सुगंध घोलने के लिए गोस्वामी आचार्यों ने यहां स्थापित किया। हमने आज इस महान शख्सियत को गुमनामी के अंधेरों में खो दिया।

शिक्षा, साहित्य, भक्ति, संस्कृति व शास्त्रों के स्वयं एक गहनज्ञाता होने के साथ कांकरोली को उक्त क्षेत्र में एक अभिनव पहचान देते उन्होंने विश्व स्तरीय शोध संस्थान के रूप में विद्या विभाग की स्थापना कराई।

अष्टछाप साहित्य व सामाजिक सर्वेक्षणों के साथ भारतीय वाङ्‌मय का यह एक अद्वितीय अध्ययन केन्द्र रहा। वल्लभीय सुधा और दिव्यादर्श जैसी प्राचीन पत्रिकाओं का संपादन आपकी देन रही और इसी के समानान्तर द्वारकेश पुस्तकालय, द्वारकेश चित्रशाला, द्वारकेश व्यायामशाला, द्वारकेश विश्व वस्तु संग्रहालय, द्वारकेश कवि मंडल, सरस्वती भंडार आपके कला व संस्कृति प्रेमी होने का प्रमाण रहा। हॉकी खेल के स्वयं एक अच्छे जानकार होने के साथ आपने महाराजा क्लब के माध्यम से नगर की हॉकी को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। एक संवेदनशील पक्षी- पशु प्रेमी आपश्री ने मंदिर की बैठक में एक चहचहाता चिड़ियाघर विकसित किया था, वहीं विट्ठलविलास बाग का निर्माण करा वहां भी पक्षियों व पशुओं के लिए सुविधाजनक जन्तुआलय का विकास भी कराया। कांकरोली नगर के बहुआयामी विकास के ऐसे सांस्कृतिक पुरुस्कर्ता को नमन।

प्रस्तुति

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार, कांकरोली

शब्द तो मात्र ध्वनि है

एक आदमी परदेस गया। वह एक बड़े होटल के सामने खड़ा है। लोग भीतर आ रहे हैं, जा रहे हैं, बैरे लोगों का स्वागत कर रहे हैं। उसने समझा कि कोई राजभोज है। वह भी चला गया। उसका भी स्वागत किया गया। उसको भी बिठाया गया। थाली लगाई गई, उसने भोजन किया। उसने कहा- अदभुत नगर है। इतना अतिथि सत्कार। फिर बैरा तश्तरी में रख कर उसका बिल ले आया, लेकिन वह समझा कि बड़े अदभुत लोग हैं। लिख कर धन्यवाद भी दे रहे हैं कि आपने बड़ी कृपा की है कि आप आए। वह झुक- झुक कर नमस्कार करने लगा। वह बोला कि बड़ा खुश हूं, मगर वह बैरे को कुछ समझ में न आया कि मामला क्या है?

यह झुक किसलिए रहा है, नमस्कार किसलिए कर रहा है। कुछ समझा नहीं, तो मैनेजर को बुला लाया। उस आदमी ने समझा कि हद हो गई। अब खुद मालिक आ रहा है महल का। वह झुक- झुक कर नमस्कार करने लगा और बड़ी प्रशंसा करने लगा, लेकिन एक- दूसरे की बात किसी को समझ में न आई।

मैनेजर ने समझा या तो पागल है या हद दर्जे का धूर्त है। उसको पुलिस के हवाले कर दिया। वह समझा कि अब शायद सम्राट के पास ले जा रहे हैं। उसे ले जाया गया अदालत में, मजिस्ट्रेट बैठा था, वह समझा कि सम्राट। मजिस्ट्रेट ने सारी बात समझने की कोशिश की, लेकिन समझने का वहां कोई उपाय न था।

वहां भाषा एक- दूसरे की कोई जानता न था। आखिर उसने दंड दिया कि कुछ भी हो, इसको गधे पर बिठा कर तख्ती लगा कर इसके गले में कि यह धूर्त है, दगाबाज है और दूसरे लोग सावधान रहें, ताकि यह गांव में किसी और को धोखा न दे सके। इसकी फेरी लगवाई जाए।

जब उसको गधे पर बिठाया जाने लगा, तब तो उसकी आंख से आंसू बहने लगे आनंद के। उसने कहा, हद हो गई। अब जुलूस निकाला जा रहा है। मैं सीधा सादा आदमी, मैं कोई नेता वगैरह नहीं हूं, मगर मेरा जुलूस निकाला जा रहा है। मैं तो बिलकुल गरीब आदमी हूं। यह तो नेताओं को शोभा देता है, यह आप क्या कर रहे हैं, मगर कोई उसकी सुने नहीं। जब वह गधे पर बैठ कर गांव में घूमने लगा तो स्वभावत: भीड़ भी पीछे चली। बच्चे चले शोरगुल मचाते। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं है। जीवन में ऐसा कभी अवसर मिला नहीं था। एक ही बात मन में चुभने लगी कि आज कोई अपने देश का होता और देख लेता। जाकर कहूंगा तो कोई मानेगा भी नहीं। वह बडी गौर से देख रहा है भीड़ को। जब बीच चौरस्ते पर उसका जुलूस पहुंचा। शोभायात्रा और काफी भीड़ इकट्ठी हो गई, तो उसे भीड़ में एक आदमी दिखाई पड़ा।

वह आदमी उसके देश का था। वह चिल्लाया कि अरे, मेरे भाई, देखो क्या हो रहा है। लेकिन वह दूसरा आदमी तो इस देश की भाषा समझने लगा था। यहां कई साल रह चुका था। ऐसा सिर झुका कर वह भीड़ में से निकल गया कि कोई दूसरा यह न देख ले कि हमारा इनसे संबंध है, लेकिन गधे पर बैठे हुए नेता ने समझा कि हद हो गई। ईर्ष्या की भी एक सीमा होती है।

भाषा समझ में न आए तो फिर मनगढ़ंत है सब हिसाब। जब तक समझ में आता है, तब तक अच्छा शब्द, बुरा शब्द। जब समझ में नहीं आता तो सभी शब्द बराबर हैं, कोई अर्थ नहीं है। अर्थ नहीं है शब्दों में- अर्थ माना हुआ है। शब्द तो केवल ध्वनियां हैं। अर्थहीन। जिस दिन यह समझ में आ जाता है कि शब्द तो केवल ध्वनियां हैं अर्थहीन। उस दिन जीवन में एक बड़ी अभूतपूर्व घटना घटती है। तुम शब्द से मुक्त होते हो, तो तुम समाज से भी मुक्त हो जाते हो। क्योंकि समाज यानी शब्द। बिना शब्द के कोई समाज नहीं है। इसलिए तो जानवरों का कोई समाज नहीं होता, आदमियों का समाज होता है। समाज के लिए भाषा चाहिए। दो को जोड़ने के लिए भाषा चाहिए। अगर दो के बीच भाषा न हो तो जोड़ नहीं पैदा होता, तो भाषा समाज को बनाती है। भाषा आधार है। अब जिस व्यक्ति को सच में ही संन्यासी होना हो, उसे समाज से भागने की कोई जरूरत नहीं। सिर्फ भाषा का जो राग- विराग है, उससे मुक्त हो जाना काफी है। बस इतना जान ले कि शब्द तो मात्र ध्वनियां है- अर्थहीन, मूल्यहीन, न अच्छे हैं, न बुरे हैं।

ऐसा जानते ही तुम अचानक पाओगे तुम मुक्त हो गए समाज से। अब तुम्हें कोई न तो गाली दे कर दुखी कर सकता है, न खुशामद करके तुम्हें प्रसन्न कर सकता है। जिस दिन तुम लोगों के दुख देने और सुख देने की क्षमता के पार हो गए। उस दिन तुम पार हो गए।

- ओशो

इतना आसां भी नहीं है पप्पु होना

'पप्पु', इस शब्द की पिछले दिनों देश में बहुत चर्चा हुई। किसी व्यक्ति का उपहास उड़ाने के लिए उसे पप्पु कह देने की परम्परा सी चल पड़ी है, जबकि देश में लाखों व्यक्तिओं के घर के नाम पप्पु रहे होंगे और अभी नन्हें बच्चों के रूप में कई पप्पु घरों में खेल रहे होंगे। दरअसल पप्पु किसी व्यक्ति का नाम न होकर वह भावना है, जो किसी के अंदर प्यार, स्नेह, आदर व सम्मान करना सिखाती है। इसीलिए तो बच्चों के नाम पप्पु रखे जाते हैं।

इसी भावना से ओतप्रोत हमारे राहुल भैया थोड़ी पप्पुयियत जगाने मोदीजी से गले जा मिले, ताकि उस विराट व्यक्तित्व का कुछ अंश ग्रहण कर सके। लेकिन हमारे मोदीजी ठहरे पूरे कंजूस, वह देने में नहीं लेने में विश्वास रखते हैं। तभी तो नोटबन्दी की मार्फत पूरे देश की माताओं, बहनों की गुप्त बचत छीन ली। जीएसटी लगाकर भरपूर मंदी आने से व्यापारियों का सुख चैन छीन लिया। हजारों कल कारखाने बंद होने से लाखों मजदूरों का रोजगार छीन लिया, कश्मीर से महबूबा की सरकार छीन ली।

अब हमारे राहुल भैया ने गले लगने के बाद आंख क्या मार दी सारे देश मे हंगामा हो गया। किसी शोध में पढ़ा था कि आंखे झपकाने वाली मांसपेशी, जिसे आंख मारना भी कह सकते हैं। वह 20 से 35 वर्ष तक की आयु में सर्वाधिक सक्रिय रहती हैं। 35 वर्ष से 48 वर्ष की आयु में मध्यम स्तर पर सक्रिय रहती है और 49 वर्ष से 60 वर्ष की आयु तक उसमें हरकत बनी रहती है। 60 वर्ष की आयु के बाद आंख झपकती नहीं, सिर्फ बंद होती है। तो फिर हमारे चिर युवा राहुल भैया ने आंख मार दी, तो क्या हुआ। आखिर ये उम्र का तकाजा भी है। इस उम्र में आखिर नहीं झपकेगी तो क्या 60 वर्ष की आयु के बाद झपकेगी। अब तो सुप्रीम कोर्ट ने भी कह दिया है, आंख मारने से किसी धारा का उल्लंघन नहीं होता। राहुल बाबा के अंदर विराजमान पप्पुयियत ने आंख झपकवा दी, वरना तो संसद में कई सदस्य तो संसदीय कार्यवाही के दौरान सोते रहते हैं और इस तरह देश में विकास का रथ दौड़ाने में सहायक भूमिका अदा करते हैं।

कुछ दिनों पूर्व टीवी पर समाचार देखते वक्त जो हंसी शुरू हुई वो कमबख्त अब तक बंद नहीं हुई है। हंसते हंसते पेट में दर्द होने लग गया है। उस वक्त समाचार में किसी सभा में हमारे मोटा भाई कह रहे थे कि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी हो जायेगी। इसमें भी छुपा हुआ संदेश यह है कि 2019 में हमें लाईये। भाई एक बार किसान जिंदा तो रह जाए, एक गुनी दो गुनी तो बाद की बात है। यह आधुनिक दौर का सबसे तेज फेंका गया बयान था। आजकल तो हमने टीवी पर कॉमेडी शो देखना ही बंद कर दिया है। इन नेता लोगों के भाषण सुन सुन कर ही काफी मनोरंजन हो जाता है।

इसी बीच लड़कपन में देखी गई एक फिल्म का सीन याद आ गया, जिसमें अमिताभ बच्चन, शशि कपूर से कहते हैं। आज मेरे पास गाड़ी है, बंगला है, शोहरत है, दौलत है, तुम्हारे पास क्या है? तब शशि कपूर कहते हैं मेरे पास मां है। उसी तर्ज पर अगर इमरान खान कह दे पाकिस्तान के पास लश्करे तय्यबा है, अल कायदा है, मसूद अजहर है, हाफिज सईद है, आतंकवादियों की फौज है, परमाणु बम है। भारतवालों तुम्हारे पास क्या है ?

हम भी 56 इंच का सीना गर्व से ठोक कर कह सकते हैं। हमारे पास मोटा भाई हैं। इमरान खान तुमने अपने कॅरियर में जो सबसे तेज गेंद फेंकी थी, उससे 100 गुना तेज हमारे मोटा भाई फेंक सकते हैं और हमारे मोटा भाई की मदद के लिए 'मित्रों' भी तैयार है। तुम तुम्हारी शाहीन मिसाईल को लॉन्चिंग पेड पर जब तक लाओगे तब तक तो मोटा भाई और 'मित्रो' अपनी जुबानी मिसाईल से तुम्हे तहस नहस कर चुके होंगे। तुम्हारी शाहीन से हमारी जुबानी

मिसाईले कई गुना तेज है, जो आकाश, पाताल और दुनिया के किसी भी कोने में मार कर सकती है।

हमारे मोदीजी ने अकेले जितनी विदेश यात्राएं की है। उतनी 1947 से तुम्हारे जितने भी राष्ट्राध्यक्ष हुए है, उन सभी ने मिलाकर भी इनसे आधी यात्राएं भी नहीं की होगी। फिर भी विश्व के कितने ही कोने बाकी रह गए हैं। हमारे यहां तो एक हवाई जहाज का इंजन तो 24 घंटे चालू रहता है, कभी बंद नहीं होता, आदरणीय का कब मूड बन जाए और निकल ले। हमारी बराबरी करने की सोचना भी मत, भारत तुम्हारा बाप है और बाप ही रहेगा।

अभी देश में फेंकने की प्रतियोगिता चल रही है, बिल्कुल फेंकू माहौल हो गया है, कांग्रेस भी इससे अछूती नहीं रही है। एक दिन सचिन पायलट के हवाले से समाचार छपा कि राहुलजी को तो मंदिर जाने की प्रेरणा जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी ने दी थी। इंदिराजी तक तो बात समझ आती है, लेकिन जवाहरलाल नेहरू... ?

जवाहरलाल नेहरू का देहांत 1964 में हुआ था यानि कि आज से 36 +18 = 54 वर्ष पहले तो हमारे चिर युवा कुंवारे राहुल गांधी की आयु आज क्या 54 वर्ष या उससे अधिक है। या वह 1964 से पहले पैदा होकर ऊआ ऊआ करते जवाहरलाल नेहरू की गोद में दर्शन करने मंदिर जाते थे। हद हो गई, फेंकने की भी कोई सीमा तो होती होगी।

हमारे मोटा भाई तो बैठे बैठे ही फिरकी ले लेते हैं। मोटा भाई 2014 में एक गेंद (चुनाव) में लगभग 300 विकेट (सांसद) लेने का कारनामा कर चुके हैं। मोटा भाई की काबिलियत को अक्सर कांग्रेसी कम आंक कर चलते हैं, तभी तो फिरकी ही फिरकी में अल्पमत में होते हुए भी गोवा में सरकार बना ली। उत्तरपूर्वी राज्यों में सरकार बना ली। अभी ताजा ताजा अल्पमत में होते हुए भी राज्यसभा में मोटा भाई ने अपने समर्थक दल का उपसभापति बनवा दिया। इन दोनों रणबांकुरों के होते हुए 2019 में कांग्रेस के कोई आसार दिख नहीं रहे। कांग्रेस जागती आंखों से सपने देख रही है।

इन दिनों देश में एक अजीब ही परिदृश्य दिखाई दे रहा है। सरदार बांसुरी बजा रहा है। सारे दरबारी और भक्तगण सम्मोहित होकर नमो नमो जपते हुए नाच रहे हैं। सरदार के पिटारे में कई राग रागिनियां है। कभी वह 15 लाख, काला धन का राग लगा देता है, तो कभी धारा 370 ए मंदिर निर्माण का राग लगा देता है, तो कभी 2 करोड़ रोजगार या कश्मीर राग लगा देता है। उसके पिटारे में अभी भी कई राग रागिनियां बची है, जो मौका देख कर समयानुसार निकाली जाएगी। इनमें प्रमुख है तीन तलाक, हिन्दू मुस्लिम दंगे, पाकिस्तानी राग, चीनी राग, बंगलादेशी राग, आईआरसी राग इत्यादि।

इन दिनों एक नए फार्मूले का आविष्कार हुआ है। एक झूठ को चिल्ला चिल्ला कर 10 बार बोलो, 11वीं बार वो सच मान लिया जायेगा। कभी कभी तो मुझे लगता है, मेरे दिमाग की संरचना में केमिकल लोचा है, ईश्वर में बनाते समय हमारे दिमाग में केमिकल थोड़ा ज्यादा डाल दिया। इसीलिए यह सवाल में से सवाल पूछने लगता है। एक सवाल का जवाब आता नहीं, उससे पहले दूसरा सवाल पूछने लगता है।

अब ये फिर पूछ रहा देशवासियों की तरफ से मोटा भाई से पूछो, ऐसी कौनसी जादू की छड़ी है आपके पास जो आपके पुत्र की कंपनी ने इतने कम समय में 500 गुना मुनाफा कमाया। कुछ टिप्स देशवासियों को भी बताये ताकि इन दिनों जीएसटी के कारण दीन हीन गरीब इन व्यापारियों का भी कुछ भला हो जाये।

दरअसल हमारा घर का नाम पप्पु है, तो हमारी बिरादरी पर संकट आते देख कैसे चुप बैठते। अब हमारे पास वाक चातुर्य तो है नहीं, जो अपनी चतुराई से सबको चुप करा दे। ना ही बाहुबल है, जिसके सहारे कुछ जोर आजमाईश कर ले। हमारे पास तो सिर्फ कलम है जिसके माध्यम से अपनी बात कह सकते हैं।

इस पोस्ट के कोई राजनीतिक मायने न निकाले जाये। मैं किसी भी पार्टी का विरोधी या भक्त नहीं हूं। सिर्फ देशभक्त हूं। बस हास्य व्यंग्य का आनंद ले। क्योंकि एक सांपनाथ है, तो दूसरा नागनाथ है, डसेंगे दोनों ही, बस अपने अपने मौके की बात है।

ये लो फिर से दिमाग ने एक सवाल ओर दाग दिया, चौकीदार और कामगार के रहते विजय माल्या, नीरव मोदी, मेहुल चोकसी देश से कैसे भाग गए?

इस मौके पर मशहूर शायर देवेंद्र मांझी साहब का एक शेर याद आ रहा है,

जब तू ही माली तू ही चौकीदार बना।
फिर कैसे गुलशन सारा बीमार बना।।

अत: घृणा, नफरत और अफवाहों के इस दौर में अपने दिल में पप्पुयियत की भावना जिंदा रखे, हैवानियत को दूर रखें। देश के विभिन्न वर्गों और धर्मों के बीच इंसानियत की लौ जगाए रखें।

जय हिंद, वन्दे मातरम्

ललित सनाढ्य
साहित्यकार नाथद्वारा
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

रामचंद्र बागोरा क्षेत्र के प्रखर जननायक

पंचतत्व में विलीन, स्मृतिया अमिट रहेगी
स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजों से लड़े थे बागोरा

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजों को लोहे के चने चबवानें वाले पंडित रामचन्द्र बागोरा को प्रदेश में एक प्रखर, ईमानदार, स्पष्टवक्ता और आदर्श नैतिक सिद्धान्तों की राजनीति करने वाले जननेता के रूप में जाना जाते रहे हैं।

आपने किशोरावस्था में मात्र पन्द्रह वर्ष की आयु में स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े पंडित बागोरा, आपको राष्ट्रप्रेम की भावना विरासत में मिली थी। वे नाथद्वारा से स्वाधीनता संग्राम में मात्र सोलह वर्ष की आयु में जेल जाने वाले सबसे कम उम्र के सैनानी रहे हैं। आजादी के बाद उन्होंने सक्रिय राजनीति के माध्यम से जनसेवा का मार्ग चुना वे 1970 में नाथद्वारा नगरपालिका के लोकप्रिय अध्यक्ष भी बनें।

आपकी विचारधारा भारतीय जनसंघ के करीब होने से नैतिक सैद्धान्तिक और आदर्श मूल्यों पर चलने वाले पं. बागोरा अन्दर से एक अति संवेदनशील, भावुक, मानवीय भावना से परिपूर्ण, साहित्यकार, गीतकार और परम भगवदीय वैष्णवजन भी हैं। आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी रहा है। आप ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ एवं ज्ञाता भी है। बहुत ही कम लोग जानते है कि हम सभी के आदर्श पं. बागोरा की ख्याति मुम्बई के बॉलीवुड में एक नामचीन गीतकार एवं कहानीकार के रूप मे विख्यात रही हैं। उनके द्वारा रचित गीतों और भजनों को प्रसिद्ध पार्श्वगायक मोहम्मद रफीक, महेन्द्र कपूर, मुकेश, आशा भौंसलं और अनूप जलोटा, उदित नारायण, अनुराधा पोडवाल तक ने स्वर प्रदान किए हैं।

आपके द्वारा लिखे गए भजन 'कभी कभी भगवान को भी भक्तों से काम पड़े, जाना था गंगा पार, प्रभु केवट की नाव चढ़े...' आज भी घर घर में लोकप्रिय है। बागोरा जी द्वारा लिखी गई पट्कथाओं पर तीन फिल्में बन चुकी है, जो बहुत ही सफल रही थी।

प्रभु श्रीनाथजी में प्रगाढ़ आस्था रखनं वाले पं. बागोरा के अपने जमाने की विख्यात नायिका और केन्द्रीय सैंसर बोर्ड की पूर्व अध्यक्ष आशा पारीख और उनके परिवार में आज भी घनिष्ठ संबंध है। फिल्म इंडस्ट्रीज में एक समय आशा पारीख के पिता कुछ परेशानियो में आ गए थे। ऐसे समय में प. बागोरा ने अपने सम्पर्क से उन्हें फिर से स्थापित होने में अपनत्व भाव से साथ दिया था। वे भाजपा जिलाध्यक्ष भी रहे हैं।

अपने लम्बे राजनैतिक जीवन में नैतिकता एवं राजनीति के उच्च आदर्श मूल्यों को सर्वोपरि रखा। अपने सिद्धान्तों के साथ कभी समझौता नहीं किया, आज नब्बे वर्ष की उम्र में भी आपने दैन्यदिन की गतिविधियां में युवाओं जैसी उर्जा, चैतन्यशिलता और स्फूर्ति दिखाई देती रही।

सृजन की पारिवारिक विरासत को ऊंचाईयां प्रदान करने वाले पं. बागोरा का जन्म ख्यातनाम जादूगर एवं ज्योतिष प्रोफेसर नारायणदास बागोरा और माता सरस्वती देवी के घर दिनांक 24 मई 1926 को हुआ। आपके पुत्र शरद् बागोरा ने भी साहित्य सृजन एवं कवित्व में नए आयाम स्थापित किए हैं। पं. बागोरा का सम्पूर्ण जीवन ही प्रेरणादायक रहा है।

परिवार के साथ जेल गए थे बागोरा

बागोरा मात्र पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु में ही आजादी की लडाई में कूद पडे थे। देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत रहे तथा पिता नारायणदास, मां सरस्वती देवी व छोटी बहन के साथ जेल गए, पर अग्रेंजो की गुलामी के खिलाफ लड़ते रहे। युवा अवस्था में कुश्ती कला का भी शोक रहा और कई नामचीन पहलवानो के साथ दंगल लड़ी थी।

विदेश यात्राए की, दिग्गज नेताओं से था सम्पर्क

1984 में आपने अमेरिका, कनाडा सहित युरोप के कई देशो की यात्रा कर विश्व हिन्दू सम्मेलनों के श्रृंखलाबद्ध कई आयोजनो को सम्बोधित किया। राष्ट्रीय स्तर के नेता रहे पूर्व उप राष्ट्रपति भैंरोसिंह शेखावत, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपयी, लालकृष्ण आडवानी जैसे दिग्गत नेताओं से आपके सीधे सम्पर्क रहे।

सुखाडिया ने किया कांग्रेस में लाने का प्रयास

पंडित बागोरा के पिता श्री पंडित नारायणदास बागोरा कांग्रेस के ख्यातनाम नेता रहे और और उनके मोहनलाल सुखाड़िया से गहरे संबंध रहे थे। सुखड़िया ने रामचंद्र के युवा जोश, उमंग, वाकपटुता और नेतृत्व क्षमता को देख कर उनके पिता से आग्रह किया था कि वह अपने पुत्र रामचंद्र को कांग्रेस ज्वाइन करा दें। पिता प्रोफेसर यह निर्णय अपने पुत्र पर छोड़ा। बताया जाता है कि उस समय जनसंघ की विचारधारा रखने वाले पंडित बागोरा ने सुखाडिया की यह पेशकस को विनम्रता के साथ स्पष्ट रूप से मना कर दिया और कहा कि जिस पार्टी के साथ उनके विचार मेल नहीं करते, मैं उस पार्टी का साथ नहीं दे सकता।

अंतिम समय तक सक्रिय रहे

हाल ही में विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह नाथद्वारा पहुंचे, तो रामचंद्र ने मंदिर मंडल के न्यू कॉटेज में उनसे मुलाकात कर राजनीतिक हालातों के ऊपर गहन चर्चा की। पंडित बागोरा आजीवन भाजपा के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने अमित शाह से खुलकर चर्चा की व राजनीति की स्थिति बताई थी। उसी दौरान पंडित बागोरा पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधराराजे, भाजपा चुनाव प्रभारी ओम माथुर से भी मिले थे। माथुर के साथ उन्होंने करीब आधे घंटे तक बंद कमरे में राजनीतिक चर्चा कर की थी।

प्रस्तुति :
अरविन्द मुखिया
अधिस्वीकृत स्वतंत्र पत्रकार
छोटा गोपाल पुराए नाथद्वारा
मोबाइल : 94141 72422

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise With Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

क्या आपने कभी सोचा हैं?

आपके पेम्पलेट को कितने लोग पढ़ते हैं?

कितने सड़क पर बिखरे रहते हैं?

पेम्पलेट

छपवाने की अब जरूरत नहीं।

क्योंकि पेम्पलेट के खर्च में ही

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका

में अपने प्रतिष्ठान का

आप विज्ञापन लगा सकते हैं

सम्पर्क करें 9414239648

नन्हीं सी लौ

अब लिख नहीं पा रहा हूँ मैं, ये कलम बहुत डगमगाती है।
आंखों संग कलम भी रोती है, बहन- बेटियां जलाई जाती है।।

कैसे लिखूं मैं वह दर्द जो सिर्फ, महसूस ही किया जा सकता है।
तेरे को जिंदा जला दिया बहन, ऐसा कैसे, कोई कर सकता है।।

रोज-रोज बलात्कार हो रहे, बहन हम सब बहुत शर्मिंदा है।
कभी मारा तो कभी जलाया, पर गुनाहगार अभी जिंदा है।।

कातिल यहां सुरक्षित है पर, बेटियां डर डर कर जीती है।
एंटी रोमियो भी चल रहा पर, बेटियां खून के आंसू पीती है।।

गाय कटने की अफवाह से, सारा बुलन्दशहर जला दिया।
आगरा क्यूं सोया है अब तक, जब एक बेटी को जला दिया।।

आंखों में अश्रु की धारा लिए, मेरी रूह हर पल कांप रही।
क्यों नहीं कांपे उनके हाथ जब, संजली अपनी मौत भांप रही।।

सूरज के ताप से बचती थी, पेट्रोल से जिंदा जला दिया।
कुछ तो रहम करते कुत्तों, फूल को तुमने कुचल दिया।।

इतनी हिम्मत कहां से लाए, इंसानियत को ही भुला दिया।
कुछ तो शर्म करते भेड़ियों, नन्हीं सी लौ को बुझा दिया।।

ऐसे वहसी दरिंदो को जसवंत, चौराहे पर उल्टा लटका दो।
जब तक सांस ना टूटे तब तक, शरीर से सारी चमड़ी हटवा दो।।

कवि जसवंत लाल खटीक
रतना का गुड़ा, ननाणा देवगढ़
जिला राजसमन्द
मोबाइल : 8505053291

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

प्यार का झरना

मां, ममता की मूरत या ईश्वर की सूरत
मां प्यार का झरना या गरिमा का गहना।
मां, दूध भीमा आंचल या बिखरा अश्रुजल
मां, बरगद की छांव या हंसता-गाता गांव
मां, जननी- पालक है या गृहयान की चालक है
मां, गुलाब की सौरभ या जीवन का आरंभ।
मां, सब रिश्तों की जान या दुआओं की खान
मां, हरा भरा आयोश या जिजीविषा का जोश।
मां, असीम आकाश सी या रवि के प्रकाश सी
मां, दर्पण सी निर्मल या ज्योति सी उज्जवल।
मां, पूजा सी पावन या धरती का सावन
मां! चरणों में वन्दन अर्पित अक्षत-चन्दन।

प्रकाश तातेड़
ए-102, शुभ लाभ अपार्टमेंट
रूपसागर रोड उदयपुर 313001
मोबाइल : 93515-52651

नया साल

जादू का पिटारा खुलने को है, जाने क्या क्या निकलने वाला
क्या लेकर आया है साल नया, राज धीरे धीरे है खुलने वाला

लेकर आया है खुशियां कई या संघर्ष लिखा है कहानी में
इम्तिहान है और कठिन या लिखा परिणाम जिंदगानी में
सर्द मौसम में ठिठुरता बहुत, क्या जीवन है पिघलने वाला
जादू का पिटारा खुलने को है, जाने क्या क्या निकलने वाला

किसके भाग्य मे उदय लिखा, अस्त हो रहा है किसका तारा
कौन चलेगा चाल नई नई अब, कौन बेपटरी या होगा बेसहारा
कर्म लिखेगा फल भविष्य के, मेहनती ही बनेगा किस्मतवाला
जादू का पिटारा खुलने को है, जाने क्या क्या निकलने वाला

चैन और अमन लेकर आए, आता हुआ यह साल नया
सब हिलमिल कर साथ चले, मिलकर बनाए भविष्य नया
श्वसुदेव कुटुंब का भाव लिए, उदघोष गगन में गूंजने वाला
जादू का पिटारा खुलने को हैं, जाने क्या क्या निकलने वाला

कमलेश जोशी
कांकरोली राजसमंद

राजसमंद के गौरव है कमर मेवाड़ी

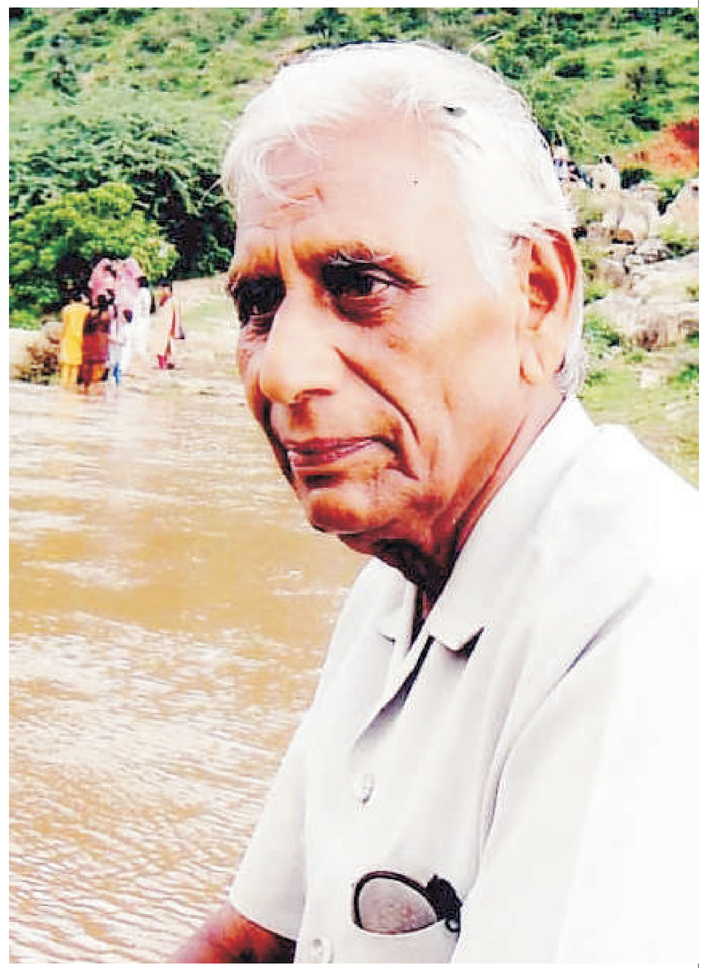

राजसमंद के गौरव, सम्बोधन के सारथी कमर मेवाड़ी की बात करू तो कहां से करूं। मेरी वय उतनी नहीं, किन्तु फिर भी कुछ कहना चाहता हूं। मेवाड़ी जी का जन्म कांकरोली में 11 जुलाई 1939 को हुआ। मेवाड़ी जी ने दीर्घकाल में विभिन्न विधाओं में लिखा हैं- कविता, उपन्यास, कहानी। उनकी मुख्य रचनाओं के नाम हैं : चांद के दाग -१९७० (कविताएं) आखिर कब तक-१९७३ (कविताएं), बहस अभी जरी हैं-१९७६ (कविताएं), फैसला होने तक-१९८३ (कविताएं), वह एक-१९७४ (उपन्यास), रोशनी की तलाश-१९७६ (कहानियां), लाशों का जंगल -१९७७ (कहानियां), उसका सपना-१९९० (कहानियां), ऊंचे कद का आदमी १९९९ (कहानियां)।

मेवाड़ी जी की कविताओं का अनुवाद अंग्रेजी, उड़िया, राजस्थानी, मराठी तथा पंजाबी में किया गया हैं। वे हिन्दी की प्रसिद्ध त्रेमासिक पत्रिका सम्बोधन का १९६६ से निरंतर 50 साल तक संपादन किया। उनकी कहानियां आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर प्रसारित हुई हैं।

कमर मेवाड़ी दो बार राजस्थान साहित्य अकादमी के सदस्य एवं दो बार आकाशवाणी सलाहकार समिति उदयपुर के सदस्य मनोनित किए गए। विशिष्ट प्रतिभा के साकाररूप कमर मेवाड़ी को कई साहित्यिक अलंकरणों से अलंकृत किए गए। साहित्य प्रचेता : सघन क्षेत्र समिति राजसमंद-१९८८, राजसमंद गौरव-१९९२, राजरत्न पुरस्कार-महाराणा राजसिंह शोध एवं स्मृति संस्थान राजसमंद-१९९६, साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान, जिलाधीश राजसमंद-१९९७, हमारा हिन्दुस्तान अवार्ड : साप्ताहिक हमारा हिंदुस्तान, राजसमंद-१९९९ साहित्य श्री सम्मान : राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति श्री डूंगरगढ़-१९९९, राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्त्राब्दी सम्मान : सहस्त्राब्दी सम्मान विश्व हिन्दी सम्मेलन, नई दिल्ली-२०००, बोहरा जीनियस अवार्ड : बोहरा वेलफेयर सोसाइटी, उदयपुर-२०००, विशिष्ट साहित्यकार सम्मान : राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर-२००१, डॉ. रघेय राघव पुरस्कार : राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर-२००१।

मेवाड़ी जी ने अपनी लेखनी यथार्थ युक्त एवं संवेदना में पीरों कर चलाई हैं। मेवाड़जी ने एक मध्यवर्गीय व्यक्ति के सामाजिक जीवन के व्यक्त करते हुए साहित्य सृजन किया हैं और कर रहे हैं। मेवाड़ी जी के सहज, सरल एवं आत्मीय व्यवहार को अनुभूत कर वरिष्ठ विष्णुचन्द्र शर्मा कहते हैं कि कमर मेवाड़ी सीधे और खरे इन्सान हैं। उनके सीधेपन में सादगी और पुरकारी नहीं जो गालिब को प्रिय थी। यह सीधी सरल रेखा नहीं ना सपाटबयानी हैं। इसमें एक कवि का मिजाज हैं। एक कहानीकार की जमीन हैं और खतरा उठाकर सामने आने वाले संपादक का व्यक्तित्व हैं। मैंने जोखिम उठाकर कमर मेवाड़ी के संपादन को देखा हैं। वह न अपने बारे में डिंग हांकते हैं न अपने को बड़ा बनाने के लिए गुप्त समझौते करता हैं। मेवाड़ी जी कई विधाओं में लिखते हैं, उस सम्बन्ध में स्वयं प्रकाश लिखते हैं। उन दिनों कमर भी सबकुछ थे- कवि, कहानीकार, उपन्यासकर, संपादक, आयोजक, संयोजक, प्रेमी, प्रकाशक, विद्रोही, क्रांतिकारी, यायावर।

मैं कमरजी को कम जातना हूं। मैं पहली बार उनसे 2012 में मिला। कारण था उनका पौता। मैं जिस महाविद्यालय में (हिन्दी) सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हूं। मैंने मेवाड़ी जी का नाम लिया कि अमुक नाम के कवि बड़े महान है, तो कक्षा में एक लड़का बोला, सर ये मेरे दादाजी है। मैंने कहा नीचे बैठ जा।

कुछ दिन बाद मैं मेवाड़ीजी के घर गया और उनसे मिला। तब वहां एक लड़का उपस्थित हुआ और चरण छुए व चला गया। मेवाड़ीजी जब बोले- मेरा पोता है। आपके महाविद्यालय में ही पढ़ता है। मुझे लगा नहीं कि यह लड़का मेवाड़ीजी का पोता हो सकता है ?

मैं स्तब्ध रहा और सोचता रहा कि क्या व्यक्तित्व है मेवाड़ीजी का साधारण व सरल। मैं वस्तुत: उनसे विद्यावाचस्पति के विषय में मिलने गया था, बात की और घर लौट आया। घर आने पर भी उनका व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्व पर छाया रहा। इस प्रथम भेंट के बाद जब भी चौपाटी पर उनका और मेरा मिलना होता, तो मैं जट से उनके चरण छू लेता, लेकिन वे उसी तत्परता से मेरा हाथ पकड़ लेते और हाथ मिलाते। बड़ी आत्मीयता से सरलता से, उदारता से, स्नेह से और यह सब अनुभूत कर मैं अभिभूत हो जाता हूं।

इस अनुभूति के बाद मुझे एक घटना और स्मरण हो जाती है, जो दो वर्ष पहले की है। गांधी सेवा सदन के सभागार में श्री मधुसूदन पंड्या के काव्य संग्रह का विमोचन कार्यक्रम था। उसमें कई प्रसिद्ध साहित्यकार थे, जिसमें श्री वेद व्यास, श्री मधुसूदन पंड्या, श्री त्रिलोकीमोहन पुरोहित, श्री सदाशिव श्रोत्रिय व श्री कमर मेवाड़ी आदि।

वे धीरे धीरे मेवाड़ी जी के साहित्य के सफर का वर्णन करने लगे। इतने बड़े व्यक्ति के बारे में सुनना सभी को रूच रहा था और इतने बड़े सरल, सहज व्यक्ति के बारे में सुनना वो भी अपने शहर का बड़ा अद्‌भुत अनुभव होता है। जैसे ही उन्होंने मेवाड़ी जी जो कि जमीनी हकीकत का निवासी है। उनकी तारीफ करने लगे अनायास मेवाड़ीजी ने उन्हें टोंक दिया। उन्होंने कहा कि मेरे तारीफ करने के लिए आपको नहीं बुलाया है। इस कार्यक्रम की गरिमा वृद्धि हेतु आप पधारे है। तब वे कुछ क्रोधित भी हुए।

अब सोचिए कौन है ? जो अपनी तारीफ से मुग्धता को ना छू ले, परन्तु कमरजी कभी भी इस मुग्धता को नहीं छूतें। अंतत: जिन्होंने तारीफ की उन्हें अपना आसन्न ग्रहण करना पड़ा। अब मेवाड़ीजी के सहज, सरल स्वभाव के बारे में क्या कहूं। वे सर्वथा किसी न किसी के बारे में चिंता करते रहते हैं।

इस बारे में प्रसिद्ध साहित्यकार वेद व्यासजी 'जो खुद एक कविता है...' लेख में कहते हैं- 'मैं अक्सर कमर मेवाड़ी को कहता रहता था कि यार। तुम इन कुपत्रों को कब तक दोस्ती के नाम पर सम्बोधन में ढोते रहोगे, लेकिन कमरजी कि हर बार झटका खाकर फिर किसी एक लेखक को सिर पर उठा लेते थे। क्योंकि कमरजी स्वभाव और संस्कार से ही एक अच्छे साथी, मित्र और दोस्त है। नदी में बहते बिच्छू और नहाते साधु की कहानी मुझे अक्सर मेवाड़ीजी की याद दिलाती है।'

पिछले वर्षो में मेवाड़ीजी नित्य बाजार में मिल ही जाते हैं। वो भी मित्रों के साथ चहलकदमी करते हुए और नित्य ही वे एक निश्चित दुकान पर बैठे दिख जाते हैं। जब भी मिलते है, उनकी पावनता मेरे कलुषित मन व तन दोनों प्रक्षालन कर देती है। मेवाड़ी ऐसे सरल व स्वाभाविक महामानव है कि दूसरों की कलुषता का प्रक्षालन कर देते हैं। उसी प्रक्षालन की प्रक्रिया में मैं कुछ हो जाता हूं और अंतत: यह लेख लिख पाया हूं।

डॉ. राजकुमार खटीक
रेलवे स्टेशन कांकरोली के पास राजसमंद
khatikrajkumar26@gmail.com

एक था सुन्दर टॉकीज

कांकरोली नगर के हृदय स्थल पर एक सिनेमाघर था, सुन्दर टॉकीज। आधुनिक मनोरंजन का मुख्य केन्द्र। फिल्म आधुनकि युग में मनोरंजन का मुख्य केन्द्र है। फिल्मी सितारे हमारे हीरो है। फिल्मे नई पीढ़ी की शिक्षा का आकर्षक साधन है। तेजी से यह जगह मोबाइल ले रहा है, पर उसमें फिल्में व फिल्मी गाने ही इधर से उधर हो रहे हैं। अधिकांश लोग तो टीवी में भी फिल्म व सीरियल ही देखते हैं।

युवा पीढ़ी इसी में डूबी है। दृश्य श्रव्य साधन का आकर्षण ही इतना जबरदस्त है कि उठते ही देवदर्शन की जगह मोबाइल के दर्शन करते हैं। बड़े बड़े मोल व पीवीआर खुलने से सिनेमा व टॉकीज विरासत बन गए। अब सिनेमा देखने वालों की संख्या घट गई है। सभी मोबाइल पर ही फिल्म देखते हैं। घर घर टीवी आ गया है। जियो ने तो सब कुछ मानो फ्री में लुटा दिया है।

सुन्दर टॉकीज श्री ब्रजभूषण महाराज द्वारा बनवाया गया था। क्या मजबूत बनावट थी, परन्तु घर के सामने इसे टूटता हुआ देखा, दिल बहुत दुखी हुआ। कई मौके तो ऐसे आए कि जेसीबी भी फैल हो गई। फिर तीन बिहारी मजदूर दिन रात लगे रहते। एक एक पत्थर कर बिल्डिंग तुड़वा दी, पर नक्शा पास करते समय फिर भी वह जमीन छोड़नी पड़ी। नए नियम के अनुसार सभी सड़कें 20 फीट की होनी चाहिए, लेकिन टूटना ही था तो टूट गया।

अब तो बस यादें रह गई है। वे ही पुराने पोस्टर, जब पेंटर हाथों से बनाते थे। पेंटिंग की शक्ल हीरो से हुबहू मिला देते थे। यह सिनेमा हमारे लिए मनोरंजन का मुख्य साधन था। हमारे मां के जमाने में महाराज आते तो सभी फिल्में देखा करते थे। हमारी मां हमें भी ले जाती थी। उस समय एक टिकिट के 40 पैसे लगते थे। खाना खा पीकर दरी साथ ले जाते थे, दरी बिछाकर बैठते। वहां कुर्सियां नहीं थी। लेडीज क्लास अलग था, जो फर्स्ट क्लास के भी ऊपर था। हम वहां बैठकर खूब मजे लेते। वहीं सो जाते, खाते पीते हुए सिनेमा देखते। हर नई फिल्म देखने का नियम सा बन गया था। रंगीन दुनिया से कठोर दुनिया के समीकरण यहीं बिठाना सीखा।

जब टीवी का प्रचलन बढ़ा तो इस सिनेमाघर में गरीबों, बीड़ी पीने वालों व अपराधियों का मनोरंजन केंद्र समझा जाने लगा। प्रबुद्धजन तो अपने घरों में सिनेमा देखने लगे थे। सिनेमा जाना मतलब सिगरेट पीने वालों के बीच बैठना। जो सिनेमा सामूहिक बराबरी का संदेश वाहक था, वह टीवी के जमाने में उपेक्षा की नजरों से देखा जाने लगा।

रेडियो उन दिनों फेमस था। पढ़ने पढ़ाने के बाद जो समय मिलता वह मनोरंजन में जाता। आज का समय उल्टा हो गया है। मनोरंजन करते हुए समय बचता ही नहीं, परीक्षा के समय भी वनवीक सीरिज पढ़ते बच्चों को देखकर जी बहुत जलता है। ज्ञान की उपेक्षित होती परतों को संभाले हुए हम नई पीढ़ी के लिए आउट ऑफ डेट होते जा रहे हैं।

भागवत व गीता के गूढ़ अर्थों व शाकुन्तलम् के छन्दों की गहराइयों में अलंकार ढूंढ़ने की ट्रेनिंग लेने वाले बच्चों को गुंडों की डिशूम डिशूम में मजा लेते देख रहे हैं। हाथ जोड़ने को मजबूर बैठे हैं कि कोई तो हमसे पढ़े समझे बहस करें। हमारे अन्दर कितना ज्ञान है। नई पीढ़ी को हमारे ज्ञान को समझने की फुरसत ही नहीं है। दृश्य की तुलना में श्रव्य साधनों में कितनी गहराई व कितना अपनापन था। अब तो कानों को आनन्द नहीं आता और आंखें तो वाट्सअप ढूंढते ढूंढते हजारों मैसेज की उपेक्षा करने के बावजूद जवाब देती जा रही है।

सुन्दर टॉकीज के सामने श्री कंठमणि शास्त्री जी का मकान जो मामाजी को मिला था। उसे मैंने ले लिया। उस पुराने घर को तुड़वाकर मैंने नया बनवाया तथा जिस दिन घर के ऊपर ब्रज निकुंज की नेम प्लेट लगवाई। उसी दिन सुन्दर टॉकीज के मैनेजर ने आकर मेरी प्रशंसा की। अरे! आपने तो बीते युग को जिंदा कर दिया। मुझे शास्त्री साहब की याद आ गई।

आज शहर के बीचोंबीच बना शास्त्री मार्केट, श्री कंठमणि शास्त्री के नाम पर बना हुआ है। नानाजी श्री कंठमणि शास्त्री को यह जमीन मंदिर से मिली थी, जिसे बाद में नारायणलाल शर्मा ने खरीदा और नाम शास्त्री मार्केट ही रखा।

इस तेजी से बदलते दौर में बचपन के साथी मिलते हैं, तब बात निकलती है। रचना जी तुम्हारा घर आशीर्वाद मार्केट के सामने है। यहां तो पहले सुन्दर टॉकीज हुआ करता था। अब तो यहां सब कुछ बदल गया है। इसकी परमिशन तो सिनेमा की मिली थी। सिनेमा चौथी मंजिल पर बनेगा, ऐसा नक्शा बना था। पहली व दूसरी मंजिल पर ही दुकानों का नक्शा पास हुआ। तीसरी मंजिल ही नहीं बनी। चौथी मंजिल व फिर से सिनेमा बनने की उम्मीद अभी दूर है। अब तो सिनेमा का नाम पता भी मिट गया। आशीर्वाद मार्केट ही चल रहा है। मन बहुत प्रसन्न हुआ। मेरे नानाजी श्री कंठमणि शास्त्री जी, जो बरसों इस घर में रहते थे एवं द्वारकाधीश मंदिर विद्या विभाग के अध्यक्ष थे। महाराज श्री ब्रजभूषणलाल जी के सानिध्य में उन्होंने विद्या विभाग में काफी काम किया। हवेली संगीत के अष्ट छाप के कीर्तनकारों के कीर्तन का संग्रह छपवाया। देशभर में घूम घूम कर पुष्टिमार्गीय साहित्य व पांडुलिपि का संग्रह किया। देशभर में आंध्र से प्रवासित हुए तैलंग, भट्ट परिवारों का वंश वृक्ष तैयार कर छपवाया। तृतीय घर का साहित्य प्रकाशित करवाया।

डॉ. रचना तैलंग
शिक्षाविद् व साहित्यकार
कांकरोली

परम दुखी भा पवनसुत

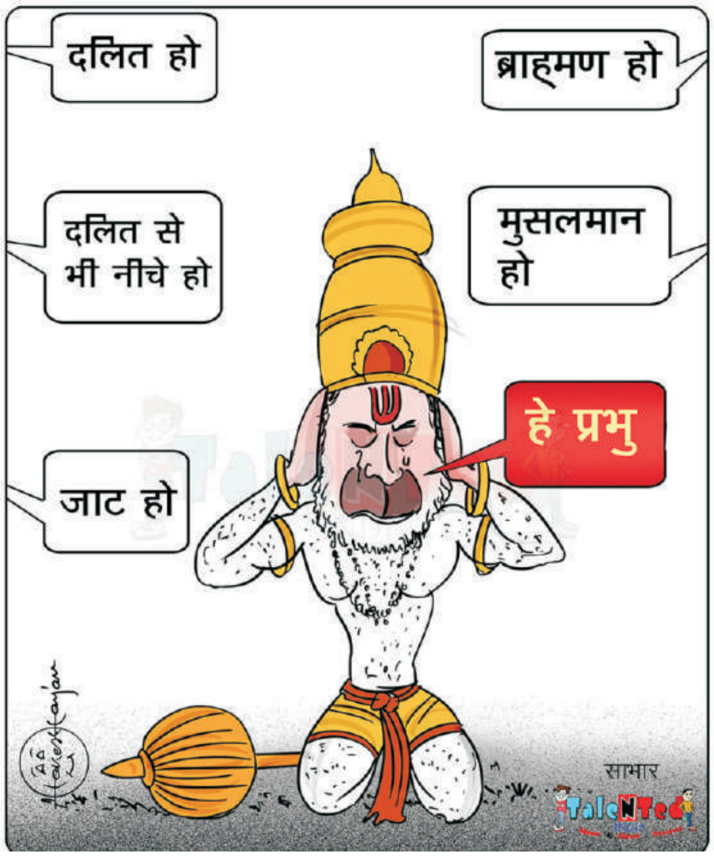

अवध नरेश आनंदवर्धन भगवान श्रीराम जी का भव्य और दिव्य दरबार लगा हुआ था। सभी दरबारी अपने- अपने उच्च आसनों पर विराजमान थे। शायद किसी जनकल्याणकारी विषय पर विचार विमर्श हो रहा था कि इतने में रामदूत पवनसुत हनुमान जी की दरबार में एंट्री हुई। लाल देह में लसी लाली मलीन सी लग रही थी, शोल्डर का मूंजी जनेऊ कुछ ज्यादा ही लटका लग रहा था। जो गदा सदैव अंस पर रहती, आज वही हाथों में लटक रही थी। सिर पर मुकुट नहीं और बालों में कंघी भी नहीं, मुख चंद पर ग्रहण की रेखाएं स्पष्ट परिलक्षित हो रही थीं। डबडबाई आंखों से पीड़ा टपक रही थी। बोझिल कदमों से आकर भगवान को दंडवत प्रणाम किया और उन्हीं पदारविन्दों के समीप बैठ गए। भक्तवत्सल भगवान ने अपने परम भक्त हनुमान की ऐसी दशा इससे पूर्व कभी नहीं देखी थी। उन्होंने अधीरता से पूछा- वत्स हनुमान! क्या हुआ? आज कुछ बदले- बदले लग रहे हो। तुम तो स्वयं संकट मोचन हो, तुम पर ऐसा कौनसा संकट आ गया, जिसके कारण ऐसी दशा हुई? तुम तो परम संत हो और संत के पास तो समस्याओं का अंत होता है।

बजरंगी उसी मुख मुद्रा में बोले- भगवन! इसी बात का तो रोना है। त्रेता में राक्षस नगरी लंका के लोग कहने लगे थे- 'साधु अवग्या कर फलु ऐसा। जरइ नगर अनाथ कर जैसा॥' पर प्रभु इन कलयुगी लोगों को इसका भी भय नहीं है। वे मेरी जाति और धर्म निर्धारित कर रहे हैं, जबकि समाज सुधारक कबीर दास ने इन मूर्खों को स्पष्ट शब्दों में बताया है-

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ग्यान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

भगवान राम मंद मुस्कान छेड़ते हुए बोले- अरे बल बुद्धि के निधान, मेरे प्यारे हनुमान! बस इतनी सी बात से दुखी हो गए? ये कलयुगी लोग हैं, इनकी बातों को दिल से नहीं लगाते। एक कान से सुनो और दूसरे से निकाल दो, क्योंकि ये अपने लाभ के लिए कुछ भी बोल सकते हैं और बोलने के बाद बात बदलना और क्षमा मांगना अच्छी तरह जानते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि धनुष से निकला बाण और मुख से निकले वचन वापस नहीं आते हैं, किंतु खद्दरधारियों ने इस तथ्य को भी झुठला दिया है और प्राय: यह सुनने में आता है कि आज फलां के वचनों से अमुक संप्रदाय, जाति, धर्म के लोगों को विशेष आघात पहुंचा, तो उसने अपने पालतू पत्रकारों को बुलाकर उनके सामने अपने वचनों को वापस ले लिया। ऐसे दिव्य एवं अभूतपूर्व कार्य इन विशेष जीवों द्वारा ही किए जा सकते हैं। इसलिए पुत्र हनुमान दुख का त्याग करो और अपनी प्रसन्नता को पुन: जागृत करो। कलयुगी लोग जब मुझे भी नहीं छोड़ते हैं, तो तुम तो मेरे सेवक ठहरे।

सभी दरबारी अपना अपना सिर हिलाने लगे, हनुमान जी सोच में ही डूबे रहे और तुलसीदास जी अपनी पंक्ति को परिमार्जित कर गुनगुनाने लगे-

'परम दुखी भा पवनसुत, लख निज दशा मलीन।'

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग,
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उत्तरप्रदेश), ग्राम टीसी, पोस्ट हसवा,
जिला फतेहपुर (उत्तर प्रदेश), : 8604112963

Rajsamand (Raj.) Customer Care No. 7568787999
hpkakancompany@gmail.com

हमारे अधिकृत विक्रेता :

राजसमंद :
- महालक्ष्मी किराणा स्टोर : 97999-30985
- देवनारायण किराणा स्टोर : 98298-92504
- एचएस ट्रेडर्स : 96948-16513

सनवाड़ :
श्री नागणेचा किराणा स्टोर : 99280-96170

केलवा :
न्यू बॉम्बे ट्रेडिंग : 77720-08888

आमेट :
श्री देवनारायण ट्रेडर्स : 96024-63254

रिछेड़ :
श्रीनाथ किराणा एवं डेयरी : 99839-96443

चारभुजा :
देवराज किराणा स्टोर : 81075-98399

उदयपुर :
विजेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी : 77920-03333

नाथद्वारा :
वंदना ट्रेडिंग कंपनी : 70145-87513

देवगढ़ :
महालक्ष्मी प्रोविजन स्टोर : 96024-50455

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक कराएं प्रति :
94142-39648

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

RAJBIL26868/2016/1284525
सामाजिक अभिरूचि का प्रयाय
जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका

Web : liverajsamand.com

LIVE NEWS

समसायिक, चर्चित घटना-दुर्घटना के लाइव वीडियो और समाचार

पड़दा री बेमारी, सब रोगां पे भारी

रूपलो वियान करीन सगुड़ी ने गाजा वाजा लारे घरे लायो। आदीक केड़े लगाई रो छेवड़ो उठायो पण सगुड़ी आरी नी कीदो। यो अठीने खेंचे न वा वठीने। दोई पसीना में तर वेई गिया, पण न तो वा हार माने न यो। सगुड़ी तो जाणे छेवड़ो काडवा री होगन लेईन आई ही। कायो पटकायो हार्‌यो नार रूपलो बोल्यो, अबे तो ढब जावो नी वींदणी। पो फाटवा री वेळा वी है। परबाते सब हुणेला तो आपांने पलकाईन ऊबो रेवणो पड़ेला। खेंचाताण ऊं पल्लो फाटी जाई न काईस वेणो जाणो नी है। यूं पार नी पड़ेला पण सगुड़ी तो लकीर री फकीर ही।

वणीरी माऊ केईन मेली के देख बेटी, हारा में सबां री लाज काड़जे। म्हाने ओळीम्बो नी मलणो चावे। कोई म्हाने आईन यूं नी केणो चावे के फलाणा जी री सोरी रे नेम लाज हरम ई कोईनी। नेम वगड़्या वेला री है। आपाणे सबरो पड़दो करणो। छेवड़ा में बी आपणा पगां हामूईस नाळणो। रूपलो घणो कायो वियो पण काई करे। वींदणी मारकणी गां ज्यूं होड़े अड़वाई नी दे। भेंट्या पे भेंट्या। गेले चालता असल तपती मोल लीदी। अबे कणी ने केवा जोगो ई नी रियो। दूजे- तीजे दन बी वाईस वात। सगुड़ी नेम पग नी मांड्यो। चौथे दिन हाळा जी बेन ने लेवा ने आया। रूपले काईस ना नुकर नी कीदा न वनाई राम राम लगाई ने गेले कीदी।

एक मीना रे लगे बगे बाई दादा कियो के अबे हारा में जाईन आणो लाव परो। रूपले कियो मीना दो मीना फेरू रेवा दो वठेई। पछे आणो लावांला। बापू धमकायो तो मन मारी न गेले वियो। हारे जाईन देख्यो के हाऊजी रे बी वाईस बेमारी। या तो खानदानी बेमारी लागे। हिरामण पाणी कीदा केड़े हाऊजी कियो, पामणा आज अठेई ढबी जावो। काले सगु रा माथा-गाबा न आटी चोटी करीन मेलांला। रूपला रे बी कोई आगत नी ही। दूजे दन लगाई ने लेईन गेले वियो।

गेला में कजाणा काई हुजी जो उदेपर रे सपाखाना रो गेलो लगतो लीदो। हुदो गयो पन्नाधाय अस्पताल में। डाक्टरणी मान्दगी पूछी तो बोल्यो, पड़दा री बेमारी वेई गी है। मूं घणी अबकाई में हूं। ठाबन्द एलाज करो। बेमारी पाछो जोर नी मारणी चावे। डाक्टरणी पाछो पूछ्यो- कदीऊं बेमारी है। रूपलो बोल्यो फेरा खादा जदीऊं या बेमारी है। पेली री वे तो अणी नेईस पूछो। सगुड़ी ना में गाबड़ हलाई। डाक्टरणी हमजायो, घणा खरा नवा वींद- वींदणी में पड़दा री बेमारी वेई जावे है। काईस होच नी करणो। एलाज ऊं बेमारी नेम जड़ां मूळ ऊं कटी जाई। पण एक सरत है। काइदो यो है के दवाया रो कोरस दोयां रे एक लारे चालेला, नी तो बेमारी निकलणी नी है।

या वात हुण तोईन रूपलो बळद केरावे ज्यूं केरावा लागो। आंखां काड़तो लगो बोल्यो, या काई वात कीदी डाक्टरणी जी। है जो रोग अणी नेईस है। म्हारे तो नख मेई रोग कोईनी। भलेई जांच करीन देखी लो। मूं तो हाजो हांतरो हूं।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
साहित्यकार, उदयपुर

LUMITEX
INNOVATIVE LIGHTS

Ground Floor, Kothari Tower
Opp. Silvr Spring Apartments
100 Ft. Road, Rajsmand (Raj.)
M. +91 8107 895 069
lumitexworld@gmail.com

- Havells & Crabtree Switches
- Havells Fan & Geyser
- Hanging Lights
- Wall Lighths
- Automation Based Light
- Table Lamps
- Mirror & Picture Lights
- Kids Lights
- Outdoor Lights
- Gate Lights & Bollard
- Commercial Lights

राजसमन्द में इनोवेटिव लाइट्स की एक बेहतरीन श्रृंखला

उचित मूल्य व उत्तम गुणवत्ता की लाइट्स, लेम्प, झूंमर, फेन सहित
कई प्रकार के आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं।

स्ट्रीट लाईट,
फ्लड लाईट एवं
व्यावसायिक कार्यो में
उपयोग आने वाली
लाईट्स उचित मूल्य पर
उपलब्ध।

ग्राउंड फ्लोर, कोठारी टावर, सिल्वर स्प्रिंग अपार्टमेंट के सामने 100 फीट रोड, राजसमंद मो. 8107895069

आज ही प्रवेश लें

केलवा व सायों का खेड़ा में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकेटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु ट्यूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीट्यूट

sunshininstitute9@gmail.com

हनुमान नगर, सांयों का खेड़ा मो. 7976752935, 9950084705
ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To